Vol. II
No. 6



*Wednesday,
25th August, 1954.*

HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY DEBATES

Official Report

PART II—PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTIONS AND ANSWERS

CONTENTS

Note:—* At the commencement of the Speech denotes confirmation not received.

GOVERNMENT PRESS
HYDERABAD-DN.
1955

THE HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY

Wednesday, the 25th August 1954.

The House met at Half Past Two of the Clock.

[Mr. Speaker in the Chair]

(**Questions & Answers**)

See Part I

L. A. Bill No. XVIII of 1954, the Hyderabad Abolition of Inams Bill, 1954

श्री. रामगोपाल नावंदर (कन्नड) :—कल से अिनाम्स बिल पर चर्चा हो रही है। तमाम अरकान कल से अबतक अपने विचार अिस बारे में पेश किये हैं। अिस बिल में अेक क्लॉज बहुत अहम है, या कम से कम मैं तो अिसको अहम समझता हूं। हमारे हुकूमत ने जो अुन्नति का काम अिस थोडेसे अरसे में किया है, अुसका महत्व है। यह बिल अुसकी अेक आखरी कडी है, जो हमारे सामने है।

अिस बिल की अहमियत अिसलिये बढ जाती है कि यह हमारे साबेका पास किये हुअे लेंड रिफार्म्स बिल का अेक भाग ही है। अैसे लोग जो गरीब किसानों को लूटते थे, जिन्हें अिनामदार कहा जाता था, अुन्हें खतम करने के लिये यह बिल लाया गया है। अिसलिये अिसकी अहमियत बढ जाती है। अिस बिल को यहां पेश करने मे गो कुछ समय लग गया, अेक बार दो बार ड्राफ्टींग की गअी और अब यह बील अिस रूप में यहां आया है। मुमकीन है आप अिससे भी सौ फिसद मुत्तफिक न हों। अिसको बेहतर से बेहतर बनाने की कोशिश की गअी और मैं कहूंगा कि अब भी कोअी बेहतर सजेशन्स (Suggestions) पेश किये जायें तो अुन्हें कबूल कर के बिल को ज्यादा से ज्यादा प्रोग्रेसिव्ह (Progressive) बनाना चाहिये। यह कहा जाता है कि हुकूमत जागीरदारों और सरमायेदारों की बॅकिंग (Backing) करती है। कल ही अेक ऑनरेबल मेंबर ने कहा कि हुकूमत अैसे बिल्स के जरिये लोगों में अपने से नफरत पैदा कर रही है और अिससे लोगों में कॉंग्रेस से नाराजगी पैदा हो रही है। मैं अिसके वजाहत की जरूरत नहीं समझता कि यह अेतराज कहां तक असलियत रखता है। लेकिन अिस हुकूमत की आला कारनामों में यह अेक बिल भी है, और जिसके लिये मैं ऑनरेबल मिनिस्टर और हुकूमत को मुबारकबाद देता हूं।

अिस बिल को देखने से चंद चीजें सामने आअी। अिस बिल का मकसद खास तौर पर यह है कि बडे बडे जमीनदारों और अिनामदारों के कब्जे में जो जमीनात हैं, जिनपर वे खुद काश्त नही करते, और मुनाफा खाते हैं, अिस कानून के जरिये अुनके अैसे अिनामों को अबॉलिश (Abolish) किया जाय। तकरीबन पंधरा लाख अेकड पर अैसे अिनामात हैं जिन्हें साबेका हुकूमत ने दिया था, और कॉंग्रेस पार्टी ने पावर में आने के बाद अुनको अब तक जारी रखा। अब जिन्हें अबालिश किया जा रहा है। जिस बिल को दो भागों में तकसीम किया गया है। अेक वह जो खिदमत के हैं, या दूसरे कोंबि न के हैं, और दूसरे वह हैं जो धार्मिक संस्थाओं को और देहात में काम करनेवाले जैसे कामदार [illegible] हैं, अुन्हें दिये गये हैं। जिन्हें अलाहिदा रख कर कानून अच्छी तरीके

से बनाया जा सकता है, और ऐसी कोशिश कर रहे हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि इस किस्म का कानून भी असेंब्ली के सामने आ जायेगा। यह कहना कि हमारी ही कोशिशों से यह कानून आया है, दुरुस्त नहीं हो सकता। हुकूमत तमाम चीजों पर सोच विचार करते हुए जिन चीजों को खतम कर सकती है, करती जा रही है। अब जो कानून आया है, अगर वह आधा है तो आधा बाद में आ जायेगा। कानून में जो चाहें रख देना तो आसान है लेकिन उस पर अमल करना मुश्किल है। यह कहा जाता है कि बंबई में ऐसा है, मद्रास में ऐसा है, लेकिन यह कहते हुए इन प्रांतों के हालात को नहीं देखते। बेशक वहां जो अच्छी चीजें हैं, उन्हें यहां लाया जायेगा। लेकिन हमारे पास जो मशीनरी है, जो हालात हैं, वह ऐसे हैं कि ज्यादा से ज्यादा डिले (Delay) करने की कोशिश की जाती है और रोकने की कोशिश की जाती है। यहां चंद अनासिर ऐसे हैं, जो रोकना चाहते हैं। हमारे पास डेमाक्रसी (Democracy) पर अमल किया जाता है, लेकिन जो भी कानून बनते हैं उनको कामयाब बनाने में रुकावटें पैदा की जाती हैं। इस बिल में पांच छः क्लाजेस हैं। बहुत सी बातें तो डेफिनिशन (Definition) से ही जाहिर हो जाती हैं। इसमें यह बताया गया है कि इनामदार अपने नाम पर जो इनामी जमीन रखते हैं, उन्हें ही ले लिया जायेगा। इसको समझने में कुछ गलतफहमी हो गयी है। यह समझना कि इससे काश्तकारों को नुकसान होगा, यह ठीक नहीं है। हुकूमत का मकसद यह है कि इससे ज्यादा से ज्यादा लोगों को फायदा पहुंचे और इनामदारों को कम से कम नुकसान पहुंचे, और इस हालत में समाज की व्यवस्था कामयाबी के साथ चलती रहे। अगर डेफिनीशन की ड्राफ्टींग में कुछ गलती महसूस की जायें तो मैं मिनिस्टर साहब से दरखास्त करूंगा कि वे इन्हें अमेंड (Amend) कर लें, और इस तरह खामियों को दूर करने में हमारी हुकूमत कभी पीछे नहीं रहेगी। इसका दूसरा जुज यह है कि जो इनामी जमीनात ले लिये जायेंगे वह गवर्नमेंट में व्हेस्ट होंगे इसके बाद डिस्ट्रीब्यूशन (Distribution) के मौके पर इनामदार का भी लिहाज रखा जा कर उसको साडेचार गुना तक इस शर्त पर दिया जायेगा कि उसके पास दूसरी जमीन न हो, या वह उसके पट्टे की आराजी है, तो उसको भी इसमें शामिल किया जायेगा। इसके बाद तीन चार किसम के लोग हैं। परमनंट टेनन्ट, सूर किश्त टेनन्ट, टेंपररी टेनन्ट इनमें यह जमीन इसके बाद दीगरे तकसीम की जायेगी। इस तरह इस कानून के जरिये सब के हुकूक मलहूज रहेंगे।

थोडे से मावीजे के साथ जमीनात दी जायेंगी क्योंकि कान्स्टीटयूशन के तहत तो माविजा देना ही पडता है। इसलिये काश्तकार को कुछ नामिनल प्राइस (Nominal price) अदा करना होगा। कानून अतियात के तहत भी हमें हुकूक को मलहूज रखना है। इसलिये इस लिहाज से मावजे का आयटम आता है। मुमकिन है अव्वाम के बहुत से लोग इसको न माने, लेकिन हालात के लिहाज से यह लाजमी है। यह कहना कि इससे काश्तकारों पर अन्याय होगा, दुरुस्त नहीं है। इमकानी तौर पर कम से कम करने की कोशिश की गयी है। इसको लैंड रेवेन्यू पर रखने से भी सहूलत होगी। इस बिल में सब से अच्छी चीज न्याय मंडल है, जो डिस्ट्रिक्ट जज के लेवल पर कायम किया गया है। जिन्हें यह महसूस हो कि उनके हुकूक मुतास्सिर हो रहे हैं, तो उन्हें इस न्याय मंडल के सामने अपील करने का अधिकार रहेगा। इस तरह न्याय का दरवाजा खुला रहता है और कलेक्टर को भी पावर्स दिये गये हैं। वह भी छानबीन कर के मल्टीपल्स (Multiples) के लिहाज से माविजे का तायुन करेंगे। मैं समझता हूं कि हाउस के ऑनरेबल मेंबर्स

شری کے - انت ریڈی (بانکنڈہ) :- فرسٹ ریڈنگ کے تعلق سے ساڑھے ست بجے تک ڈسکشن جاری رکھا جائے اور ساڑھے سات بجے منسٹر صاحب اپنا جواب دیں تومناسب ہوگا - کل سکنڈ ریڈنگ لیجا سکتی ہے -

مسٹر اسپیکر :- پریکٹیکل طور پر آپکو امنڈمنٹ لانا ہے تو سکنڈ ریڈنگ کے وقت پر لاسکتے ہیں -

شری عبدالرحمن (ملک پیٹھ) :- فرسٹ ریڈنگ کے موقع پرہمیں حکومت سے توقع ہے کہ مباحث کے پیش نظر کچھ چیزیں وہ قبول کرلیگی -

شری وی - بی - راجو (سکندرآباد - عام) :- آج کا پورا دن فرسٹ ریڈنگ کی بحث کے لئے رکھا جائے اور اس پر ووٹ لیا جائے ۷ بجکر ۴۵ منٹ پر منسٹر صاحب جواب دے سکتے ہیں -

مسٹر اسپیکر :- منسٹر صاحب ۷ بجے جواب دینگے - انکے جواب کے بعد موشن فار فرسٹ ریڈنگ ووٹ کے لئے رکھا جائیگا -

मिनिस्टर फॉर फायनान्स (श्री. वि. के. कोरटकर) :—सात बजे तक जनरल डिसकशन होगा। सात बजे ऑनरेबल मिनिस्टर साहब जवाब देंगे और आज ही फर्स्ट रीडिंग खतम होगी।

Mr. Speaker : Discussion will continue till 7.00 p.m.

* شری ایل - این - ریڈی (وردنا پیٹھ) :- مسٹر اسپیکر سر - انعام ابالیشن بل جو ہمارے سامنے پیش ہوا ہے اوسکے متعلق ہماری یہ توقع تھی کہ پہلا بل جو واپس ہوا ہے اوسکو واپس لینے کے بعد اسکو نہایت جامع طور پر کاشتکاروں کے حقوق کا لحاظ کرتے ہوئے مکمل طور پر پیش کیا جائیگا لیکن ہم جب اس بل کو دیکھتے ہیں تو ہم محسوس کرتے ہیں کہ ہماری توقعات پوری نہیں ہوئیں -

[***Shri Anna Rao Ganamukhi (Chairman) in the Chair***]

بتایا جاتا ہے کہ ہمارے اسٹیٹ میں ۱۰ لاکھ ایکڑ اراضیات انعامی ہیں - ان میں سے ساڑھے تین لاکھ ایکڑ سے کچھ زیادہ دیول اور خیراتی انعامات وغیرہ سے متعلق

ہیں۔ بلوتہ‌دار نیرڑی وغیرہ کی اراضیات کسقدر ہیں سکے اعداد نہیں بتائے گئے ہیں۔
اندازہ کیا گیا ہے کہ یہ بل جن اراضیات سے متعلق ہونے والا ہے وہ پانچ لاکھ ایکڑ
اراضی ہے۔ مابقی اراضیات سے یہ بل لاگو نہیں ہوگا۔ گویا $\frac{1}{3}$ حصہ اراضیات پر یہ بل
لاگو ہوگا اور $\frac{2}{3}$ حصہ اراضیات انعامی اس سے چھوٹ جائینگے۔ یہ چیز کسی معقولیت
پر مبنی نہیں ہے یہ ہمارا خیال ہے۔ کیونکہ دعوی یہ کیا جاتا ہے کہ ہم زمینداری کے
پرانے آثار کو ختم کررہے ہیں اور برٹش سامراج کی بری چیزوں کو مٹارہے ہیں
اور یہ کہا جارہا ہے کہ اس بل کے ذریعہ انعامداری ختم ہوگی لیکن ہم یہ دیکھتے
ہیں کہ اراضیات پر کاشت کرنے والوں کو کیا حقوق دئے گئے ہیں اور چھوٹے
چھوٹے انعامداروں مثلا نیرڑی سیت سندھی وغیرہ جنکی محنت کی روزمرہ لوٹ کھسوٹ
ہوتی ہے اوسکو کس حد تک دور کیا گیا ہے تو ہم اس بارے میں مایوس ہورہے ہیں۔
اس میں بلوتہ‌دار۔ سیت سندھی۔ نیرڑی وغیرہ کو مستثنی کیا گیا ہے۔ میں موور آف
دی بل سے پوچھنا چاہتا ہوں کہ ان لوگوں کو اس میں کیوں شامل نہیں کیا گیا؟
ان لوگوں سے بیٹی بیگاری کا کام غلاموں کی طرح لیا جاتا ہے حالانکہ کنسٹی ٹیوشن کے
تحت بیٹی بیگاری لینا صحیح نہیں ہے۔ اسکے باوجود بیٹی بیگاری کا رواج دیہاتوں سے کیوں
نہیں مٹ رہا ہے۔ ہم دیکھتے ہیں کہ دیہاتوں میں کامدار لوگ بیٹی کرنے سے انکار
کرتے ہیں تو عہدہ‌داران سرکاری کہتے ہیں کہ اگر بیٹی بیگاری نہ کرینگے تو انکے
اراضیات انعامی ضبط کئے جائینگے۔ آپکا ہمارا یہ فرض ہے کہ ہم اسکا انسداد کریں
تاکہ ان غریب فاقہ کش لوگوں سے بیٹی بیگاری نہ لی جایا کرے۔ بیٹی بیگاری کے
رواج کو جڑ سے اکھیڑ پھینکنا ہمارا فریضہ ہے۔ اسکے لئے ضروری ہے کہ انکے انعامات
کو پٹے میں متبدل کردیا جائے۔ تاوقتیکہ ایسا نہ کیا جائے دیہات سے بیٹی بیگاری کا
رواج مٹنے والا نہیں ہے۔ اگر انکو مستثنے رکھا گیا تو اسکا مطلب یہ ہوگا کہ آج بھی
دیہات میں بیٹی بیگاری کے رواج کو آپ باقی رکھنا چاہتے ہیں۔ کئی مرتبہ
اسمبلی میں اسکے متعلق سوالات کئے گئے۔ منسٹرس کے پاس ریپریزنٹیشنس (Re-
presentations) کئے گئے۔ اسکے جواب میں وہ زبانی ہمدردیاں تو کرتے ہیں وہ
دوروں کے موقعوں پر یہ کہتے ہیں کہ بیٹی بیگاری نہ لیجایا کرے لیکن بیگاری کا
سلسلہ آج بھی جاری ہے۔ غریب کامدار بیٹی بیگاری سے انکار کریں تو ان پر طرح
طرح سے دباؤ ڈالا جاتا ہے۔ ان پر مقدمات قائم کئے جاتے ہیں۔ اسطرح انکو
مجبور کیا جاتا ہے۔ اسلئے بیٹی بیگاری کو روکنے کا مصمم ارادہ کرنے کی ضرورت
ہے اور اسکے لئے ضروری ہے کہ بلوتہ انعام۔ خدمتی انعام نیرڑی انعام وغیرہ
ختم کئے جائیں اور ان اراضیات انعامی کا ان لوگوں کے نام پٹہ کردیا جائے۔ ان چھوٹے
انعامداروں کا دیہات میں یہ پر زور مطالبہ ہے کہ ان سے بیٹی وغیرہ نہ لیجایا کرے اور
انکے اراضیات انعامی کا انکے نام پٹہ کردیا جائے۔ لیکن اس بل میں انکو مستثنے کیا
گیا ہے۔ حکومت کا یہ خیال ہے کہ اگر انکے انعامات لے لیں تو انکو تنخواہیں وغیرہ
دینا پڑیگا جس سے خزانے پر مزید بار پڑیگا۔ میں مانتا ہوں کہ بار ہوگا لیکن جب

آپ جاگیرداروں کو کروڑوں روپیہ معاوضہ دیتے ہیں - لاکھوں روپیہ انعامداروں کو معاوضہ دیتے ہیں اور اسکو خزانہ پر بار نہیں تصور کرتے تو پھر ان غریبوں کو تنخواہیں مقرر کرنا کیوں بار سمجھا جارہا ہے - میں اسکی تائید نہیں کرسکتا - میں سمجھتا ہوں کہ حکومت کے خزانے پر زیادہ بار نہیں ہوگا - دیہات میں نیرڑی و سیت سندھی کو آپ کیا معاوضہ دیتے ہیں ؟ تین روپیہ یا چار ساڑھے چار روپیہ دیتے ہیں - ان میں نصف تعداد بتوتہ داروں کی ہے - ان اراضیات کا ضم کردیں تو بتوتہ داروں سے زر مالگزاری وصول کرسکتے ہیں - انکو نوکریاں دینا ضروری نہیں ہے - البتہ سیت سندھی اور نیرڑی کو نوکری دینا پڑیگا - صرف انکی تنخواہوں کا بار پڑیگا - اسلئے میں حکومت سے اور خاص طور پر سوور آف دی بل سے اپیل کرونگا کہ وہ اس مسئلہ پر غور کریں اور بتوتہ انعام کو اس میں شامل کریں - ہم تقریباً ۱۹۲۰ع سے بیٹی بیگاری کے خلاف جدوجہد کررہے ہیں اور ہم یہ چاہتے ہیں کہ یہ بیگاری کی بیماری کو بنیاد سے اکھیڑ پھینکیں - اس لئے اسکو اس بل کے تحت لائیں تو مناسب ہوگا - اس طرح ہماری جدوجہد کا ثمرہ مل جائیگا - دیول اور معاشہائے خیراتی کو بھی مستثنے کیا گیا ہے - انکو بھی اس بل میں شامل نہیں کیا گیا ہے - جو اعداد بتائے گئے ہیں اون سے معلوم ہوا کہ ساڑھے تین لاکھ ایکڑ سے زیادہ رقبہ دیول اور مذہبی اداروں کے تحت ہے - ہمارا یہ مقصد نہیں ہے کہ ان اداروں کی مدد نہ کیجائے یا پوجا پاٹ نہ ہو - ہم اسکے خلاف نہیں ہیں - لیکن ان اراضیات پر کاشت کرنے والوں کی کیا درگت ہوگی ؟ حکومت اس بارے میں کیا سوچ رہی ہے ؟ ان خیراتی اداروں کو ٹیننسی ایکٹ سے بھی مستثنے کیا گیا ہے - اور اس قانون سے بھی مستثنی کیا گیا ہے - حکومت کی کیا روایات ہیں انکی جانچ کریں تو معلوم ہوگا - اوقاف کی بڑی بڑی جائدادیں ہیں انکے تعلق سے یہ طریقہ اختیار کیا جارہا ہے کہ موقوفہ جائداد وغیرہ کے انتظام اور کاروبار کی انجام دہی کے نام سے غریب کاشتکاروں کو زمینات سے بیدخل کیاجارہا ہے اور ان زمینات کو ہراج کرکے جن کی بولی سب سے زیادہ رقم کی آتی ہے انکو کاشت کیلئے دیجارہی ہیں - خصوصاً تین چار سال سے یہ مسئلہ اہم ہوگیا ہے - نظام کے زمانے میں اس قسم کا عمل نہیں ہوا - کئی قابضین اراضی ایسے ہیں جو دیول وغیرہ کے تحت اراضیات کی ڈبل مالگزاری دے رہے ہیں - انکو آمدنی کے بڑھانے کے حیلے سے بیدخل کرنے کی کوشش کی گئی ہے اور کیجارہی ہے - جب وہ زائد منافع نہ دینا چاہیں تو انہیں بیدخل کرنے کی کوشش کیجاتی ہے - قولداری کا بل جب پیش ہوا تو اسمبلی میں اس جانب توجہ دلائی گئی کہ دیول کی اراضیات کو بھی قولداری قانون سے متعلق کیا جائے - اوسوقت یہ جواب ملا کہ اسوقت اسبارے میں اصرار کا موقع نہیں ہے - ہم انعام ابالیشن ایکٹ لارہے ہیں اوس وقت اس بارے میں غور و بحث ہوسکتی ہے - ہم بڑی توقع سے دیکھ رہے تھے کہ ساڑھے تین لاکھ ایکڑ سے زیادہ رقبہ پر کاشت کرنے والوں کے بارے میں اس بل میں کیا فیصلہ کیا جاتا ہے - لیکن ہم دیکھ رہے ہیں کہ انکو اوسی پوزیشن میں رکھا گیا ہے - نہ انعام ابالیشن ایکٹ اون سے متعلق کیا گیا اور نہ ہی قولداری کا قانون - وہ غریب جو سالہاسال سے کاشت کرتے

آرہے ھیں اون سے زیادہ منافع حاصل کرنے کیلئے یہ تدابیر اختیار کئے جارہے ھیں ایسا معلوم ھوتا ھے -

یہ انتہائی مذموم طریقہ ھے - حکومت کو چاھیئے کہ یا تو اس بل کے تحت اون اراضیات کو لایا جائے ورنہ اون کے حقوق قولداری کے متعلق جیسا کہ دوسرے ٹیننٹس کو پروٹیکشن (Protection)دیا گیا ان کو بھی پروٹیکشن دیا جائے - وھاں تو فیررنٹ (Fair rent) اور انتہائی رنٹ وغیرہ مقرر کیا گیا تھا - اور زمینات سے بیدخل کرنے کے متعلق قواعد بنائے گئے تھے - یہاں پر ویسا نہیں - اس واسطے ھم مجبور ھیں کہ جو اگزمپشن (Exemption)اس بل کے تحت دیا گیا ھے اوس کی مخالفت کریں - یہ سوال ھوسکتا ھے کہ اگر دیولوں سے متعلق کیا جائے تو کیا ھوگا ؟ میں یہ کہوں گا کہ حکومت اون کو گرانٹ دے سکتی ھے - حکومت کو کمپنسیشن (Compensation)میں سے جو روپیہ ملے گا اوس میں سے کچھ نہ کچھ سالانہ مقرر کرسکتی ھے - اگر کم پڑے تو اپنے خزانہ سے حکومت دے سکتی ھے - مگر ان دیولوں کا خرچہ آپ اون غریبوں پر کیوں ڈال رھے ھیں - اتنی ھی بھگتی ھے تو پبلک کے خزانہ سے پیسہ دیا جائے - لیکن اون غریبوں کو لوٹنے کی ھمت افزائی مت کیجئے - یہ کہا گیا ھے کہ اس بل میں نامینل معاوضہ دیا جارھا ھے - اور حکومت انعامداروں سے زمینات لیکر بالراست دوسروں کو دیگی - لیکن کس قیمت پر دیگی - آپ یہ قیمت یا وہ معاوضہ کس کے مفاد کی خاطر مقرر کئے ھیں - یہ کاشتکاروں کے مفاد کے لئے مقرر کئے ھیں یا اون انعامداروں کے مفاد کی خاطر جو سالہا سال سے کاشتکاروں کو لوٹ رھے ھیں ؟ آپ تو اس نقطہ نظر سے معاوضہ مقرر کئے ھیں کہ انعامداروں کو منصفانہ معاوضہ ملے - انعامدار خود جو دوسروں سے معاوضہ لے رھے ھیں وہ کونسا معاوضہ لے رھے ھیں اون کے مقرر کردہ معاوضہ اور آپ کے مقرر کردہ معاوضہ پر غور کریں تو فرق معلوم ھوگا اور یہ پتہ لگے گا کہ آپ کا ھی مقرر کردہ معاوضہ زیادہ ھے - میں اس سلسلہ میں دو تین باتیں عرض کروں گا - ونپرتی سمستان کے راجہ صاحب نے اپنی کچھ زمینات فروخت کی ھیں - جہاں تک مجھے معلومات ھوئی ھیں اون سے پتہ چلتا ھے کہ چار گونا یا دس گونا مالگزاری کی قیمت پر انہوں نے اپنی اراضیات فروخت کی ھیں - اس کے مقابلہ میں تو آپ کاشتکاروں کو لوٹ رھے ھیں - انعامدار جو لوگوں کو لوٹا کرتا تھا وہ تو چار گونا یا دس گونا معاوضہ پر اراضی فروخت کررھا ھے اور آپ کی گورنمنٹ جو پاپولر گورنمنٹ ھے وہ پچیس سے لیکر ساٹھ گونا معاوضہ مقرر کررھی ھے گدوال میں چودہ ھزار ایکر سیری کی زمینات ھیں وھاں کے اسٹیٹ والے بیچنا چاہ رھے ھیں اور لوگوں کو مجبور کررھے ھیں کہ دس سال کی زر مالگزاری دیکر زمین خرید لیں لیکن اکثر لوگ وھاں زمین نہیں لے رھے ھیں - دوسرے سمستان کے مقابلہ میں آپ گدوال میں جاکر دیکھیئے - وھاں دس پندرہ پرسنٹ سے زیادہ لوگ زمین نہیں خرید رھے ھیں - اس کے مقابلہ میں ونپرتی سمستان میں سنٹ پرسنٹ زمین فروخت ھوگئی ھے - کولھاپور میں بھی بارہ ھزار ایکر زمین ھے - وھاں اس اراضی کا مشتہ حصہ رعایا کے حق میں فروخت کیا گیا ھے - جہاں تک مجھے معلومات ھیں گدوال

या अिनामी जमीनी दोन तीन प्रकारच्या आहेत. पहिला प्रकार म्हणजे ज्या लोकांनी त्यावेळीं सरकारला मदत केली किंवा असें कार्य केले, ज्यामुळें सरकारला मदत झाली अशा कामाच्या मोबदल्यांत त्यांना दिली गेलेली अिनामे, दुसरा प्रकार म्हणजे धार्मिक कृत्यासाठीं दिली गेलेलीं अिनामे आणि तिसऱ्या प्रकारांत असें अिनामें येतात कीं, जीं जनतेच्या दृष्टीने किंवा जनतेच्या सेवेच्या मोबदल्यांत दिलीं गेलीं असतील.

अशा सर्व अिनामाबाबत आपल्या असेंब्लींत आवाज निघत आहे व तीं ताबडतोब नष्ट करावीं अशी मागणी करण्यांत येत आहे. परंतु आजच्या बिलामध्यें ग्रामसेवेच्या मोबदल्यांत दिलेलीं अिनामें आणि धार्मिक कृत्याकरितां दिलीं गेलेलीं अिनामें यांच्या बाबत विचार केला गेला नाही आणि ते बरोबरच आहे. कोणतीही गोष्ट क्रमशः आणि हळू हळू केल्याने जास्त मजबूत होते म्हणून अिनामें क्रमशः नाहीशी करणे आवश्यक आहे. पण अशी जीं अिनामें आहेत कीं ज्यामुळें जनतेला कांहीं अुपयोग होत नाहीं तीं मात्र अगोदर खालसा केलीं पाहिजेत.

पूर्वीच्या काळीं अशी पद्धत होती की कोणत्याही कामाचा मोबदला पैशाच्या स्वरुपांत न देता त्या करितां कांही जमीनींचा भाग अिनाम म्हणून त्या कार्याच्या मोबदल्यांत देण्यात येत असे. अुदाहरणार्थ जसें अेखाद्या मंदिराच्या खर्चाकरितां दिले गेलेले अिनाम अशीं अिनामें आजच्या कायद्यात कायम ठेवली आहेत, आणि ते थोडया फार प्रमाणांत रास्तपण आहे. या बाबत आपणास विचारच करावयाचा झाला तर आपण हेच पाहूं शकूं कीं अिनाम ज्या कार्याकरितां दिले गेले होते तें कार्य बरोबर होत आहे किंवा नाही, तसेच त्या कार्याकरिता होणारे अुत्पन्न कमी आहे किंवा जास्त आहे त्या करितां वेगळया कायद्याची आवश्यकता आहे. त्या करिता यांतच कांहीं तरी केले पाहिजे अशी घाअी करणे अुपयोगाचे नाहीं व अशा अिनामाबद्दल कांहीं केले नाहीं म्हणून निराश होण्याचेहि कारण नाहीं.

आतां दुसऱ्या प्रकारचीं जीं अिनामें आहेत व जीं नष्ट करण्याकरितां हा कायदा आणण्यांत [illegible] आहे, स्पीकर सर, त्या बाबतीत सन्माननीय सभासदांची दोन प्रकारची विचारसरणी

दुसरे असें की या कायद्यामध्यें "कायम कुळ" म्हणून नवीनच नांवाचा अुल्लेख केला गेला आहे. कुळ कायद्यामध्यें असा अुल्लेख नाहीं. "कायम कुळ, काबीजें कदीम" या शब्दाची व्याख्या पाहिजे तशी स्पष्ट गेली गली नाहीं. तशी व्याख्या देणें आवश्यक आहे. ,कायम कुळ हा असा शेतकरी वर्ग असावा की जो जमीन अिनाम देण्यापूर्वीहि त्या जमीनीचा पट्टेदार असावा, व नंतर ह्या जमीनीं अिनाम म्हणून दिल्या गेल्यानंतरहि तो त्या जमीनीवर काबीज असावा. जमीन अिनाम दिल्यामुळें फरक येवढाच झाला असावा कीं तो पूर्वी शेतसारा सरकारला देत असें त्या ऐवजी आतां अिनामदाराला देत असावा. कारण जमीन अिनाम देतांना ती जमीन कोणाच्या ताब्यांत आहे किंवा काय याचा विचार केला जात नसे. अशी जर परिस्थिती कायम कुळाची असेल तर कायम कुळाबाबत निराळा विचार करणे आवश्यक आहे. कलम ६ मध्यें अशी तरतूद केली गेली आहे कीं कायम कुळालाहि साऱ्याच्या पंचवीस पट मोबदला द्यावा लागेल, ज्याचा कांहीं हिस्सा अिनामदाराला मिळेल. हे जे कायम कुळ आहेत त्यांच्या जमीनी दुसऱ्याला सरकारकडून अिनाम दिल्या गेल्यामुळें पट्ट्यापासून दुरावले होते पण वास्तवीक पाहता तें त्या जमीनीचे पूर्वीपासूनचे पट्टेदार आहेत. म्हणून अिनाम खालसा करतांना अशा कायम कुळांचा सरळ संबंध

सरकारनें जे इनाम घेतले त्या व त्यांना कोणत्याहि प्रकारचा मोबदला देण्याचा अट घालूं नये. नाहीं तर त्यांच्यावर अन्याय होईल असें मला वाटतें.

नंतर सर्फेखास कुळाला सान्याच्या चाळीस पट आणि असर्फेखास कुळाला सान्याच्या साठपट मोबदला द्यावा लागेल अशी अट या कायद्यांत आहे आणि अितर जमीनीं बाबत कलम बारा अनुकलम ३ मध्ये अुत्पन्नाच्या सरासरीवर मोबदला देण्याची तरतूद आहे. ह्यामुळें हिशोबाच्या बाबतीत घोटाळे निर्माण होतील आणि निष्कारण भानगडी निर्माण होतील असें मला वाटतें. म्हणून ह्या कायद्यांत निरनिराळ्या सुधारणा करणें आवश्यक आहे. आतापर्यंतच्या वक्त्यांनीं सांगितल्या प्रमाणेंहि कांहीं सुधारणा होणें आवश्यक वाटतें. आवश्यक अशा त्याच सुधारणा सरकार स्वीकारील अशी मला खात्री आहे. माझी सरकारला या बाबतीत अशी विनंति आहे कीं या कायद्यावर ज्या दोन्ही बाजूनें ज्या सुधारणा येतील त्यावर सरकारनें योग्य विचार करावा.

हा कायदा अमलांत येण्याविषयीं निश्चितपणा दिसून येत नाही. कांहीं कलम अेकदम अंमलांत येणार आहेत तर कांहीं वेळोंवेळीं गॅझेटमध्ये प्रसिद्ध केल्याप्रमाणें अमलांत येणार आहेत. यामुळें बरेच घोटाळे निर्माण होण्याचा संभव आहे आणि हा कायदा तर शक्य तितक्या लौकर अमलांत येणे आवश्यक आहे. म्हणून अडचणी टाळण्यासाठी हा कायदा अेकदम अंमलांत येअील अशा प्रकारची सुधारणा या कायद्यात होणे मला आवश्यक वाटते.

मला ज्या कांहीं सुधारणा सुचवावयाच्या होत्या त्या मी सभागृहापुढें मांडल्या आहेत. त्यावर सभागृह व सरकार योग्य तो विचार करतील अशीं आशा बाळगून मी आपलें भाषण पूरें करतो.

*شری شرن گوڑہ انعامدار (اندولہ - جیور گی) :— اسپیکر سر - میں اس بل کے بارے میں اپنے خیالات ظاہر کرنے سے پہلے ایک چیز عرض کرنا چاہتا ہوں - اب تک اس بارے میں بہت سی باتیں کہی جاچکی ہیں - آج حیدرآباد میں عوامی حکومت ہے - ہم دیکھتے ہیں کہ حکومت نے جاگیرداری - زمینداری اور انعامی سسٹم کے بارے میں جو بھی قانون پیش کیا ان میں جاگیرداروں - زمینداروں اور انعامداروں کا ہی خیال رکھا گیا - دراصل ہمیں یہ بات اپنے سامنے رکھنا ہے کہ ایک شخص کے پاس کس طرح ضرورت سے زیادہ زمین ہوتی ہے اور اس کی وجہ سے دوسرا شخص کس طرح زمین سے محروم رہتا ہے - اور اس شخص کی محنت سے زمیندار محنت کئے بغیر کس طرح فائدہ حاصل کرتا ہے - اور اس عمل کی وجہ سے اس محنت کش شخص کی زندگی پر کیا اثر پڑتا ہے - ہم نے پرادھنتا (पराधिनता) اور سوتنترتا (स्वतंत्रता) کی جو لڑائی لڑی وہ اس لئے نہیں تھی کہ حکومت ایک ھاتھ سے دوسرے ھاتھ میں آجائے - ممکن ہے کہ کچھ لوگوں کا یہ مقصد ہو - لیکن عوام نے سوتنترتا کے لئے جو لڑائی لڑی - جو قربانیاں دیں وہ اس لئے تھی کہ فیوڈل الیمنٹس (Feudal Elements) اور متمول طبقہ کس طرح غریب محنت کشوں کو اکسپلائیٹ (Exploit) کرتا ہے - اس کا انسداد کیا جائے اور اس طرح انسانیت کی بھلائی ہو - اور پھر ہمیں یہ دیکھنا

ھے کہ ان جاگیرداروں راجاؤں - نوابوں نے ھماری آزادی کی جدو جہد میں کہاں تک حصہ لیا - بلکہ وہ تو اوس وقت کی حکومت کے بغل بچے اور ھاں میں ھاں ملانے والے تھے اور انھی کی ناپاک کوششوں کی وجہ سے عوام کی بھلائی نہ ھوسکی - یہی لوگ محنت کش عوام کے دشمن اور ری ایکشنری سورسس (Reactionary Sources) اور ھماری تحریکوں کو کسی نہ کسی طریقے سے کچلنے والے رھے - آج ھماری حکومت ان کے لئے معاوضہ دینے کا بندوبست کر رھی ھے - میں خود بھی انعامدار ھوں - میرے باپ دادا کو سند دی گئی تھی - میں نے یہ معلوم کرنے کی کوشش کی کہ آخر انہوں نے ملک کی کیا بھلائی کی تھی - لیکن مجھے ایسی کوئی بات معلوم نہو سکی - بلکہ یہی کہ انہوں نے جاگیرداروں، راجاؤں اور مہاراجاؤں کے دربار میں خوشامد کی تھی - ایسی صورت میں ان سے انعام واپس لیتے وقت معاوضہ دینے کی تجویز رکھنا میری سمجھ میں نہیں آتا - اور پھر یہ معاوضہ کہاں سے دیا جائے گا - کس خزانہ سے دیا جائیگا - یہی عوام کے خزانہ سے عوام کی محنت کا جمع کیا ھوا پیسہ عوام سے وصول کئے ھوئے ٹیکسس میں سے ھی تو انہیں دیا جائے گا اسطرح ایسے لوگ جنھوں نے آزادی کے حصول میں رکاوٹیں پیدا کیں آج آزادی حاصل ھونے کے بعد بھی انہیں آزاد حکومت آرام دہ زندگی بسر کرنے کیلئے عوام سے ٹیکسس وصول کرکے انہیں معاوضہ دے رھی ھے - یہ کہا جاتا ھے کہ کانسٹی ٹیوشن کے تحت ھمیں معاوضہ دینا پڑیگا تو مجھے یہی کہنا پڑتا ھے کہ انہیں معاوضہ دینا کوئی واجبی بات نہیں ھے - ھم یہ کہہ سکتے ھیں - اور پھر آپ کہاں تک معاوضہ دیتے رھیں گے -

آپ نے جاگیر داروں کو معاوضہ دیا اب انعامداروں کو دیرھے ھیں - وطنداری کا بل آئیگا تو انہیں بھی دینگے - پٹیل پٹواریوں کو دینگے - اسطرح آپ معاوضے رکھتے جائینگے - یہ کہاں تک واجبی ھے - اس سے عوام کا کتنا نقصان ھو رھا ھے - جب انعام ابالیشن بل هاؤس میں پیش ھوا تھا تو آنریبل چیف منسٹر نے کہا تھا کہ اس بل سے جو ۲۰ - ۲۲ لاکھ روپئے کی بچت ھوگی ھم اسکو نیشنل ولفیر پر خرچ کرینگے - لیکن اسکے ساتھ ھی یہ معاوضہ کا بل آئیگا - وہ پیسہ ادھر چلا جائیگا - جب بہت دنوں سے یہ بل پیش نہیں ھوا تھا تو ھم یہ سمجھ رھے تھے کہ حکومت شائد اسکو بہتر صورت میں پیش کریگی - اتنی دیر تو ھو ھی گئی - اب معلوم ھوا ھے کہ حکومت کانسٹی ٹیوشن میں کچھ اسطرح تبدیلی کرنے کے بارے میں سوچ رھی ھے کہ عوام کے فائدہ کے لئے بلا معاوضہ کوئی چیز حاصل کی جاسکتی ھے - جب ایسی چیز آنے والی ھے تو کیوں نہ اس قانون کو مزید دو چار مہینے روک لیا جائے تاکہ اس کے بعد ھی ھم بلا معاوضہ ان انعامی اراضیات کو حاصل کرسکیں - اس سے زیادہ فائدہ ھوگا -

[*Smt. Masooma Begum* (*Chairman*) *in the Chair*]

ایک اور بات یہ ھے کہ ٹیننسی ایکٹ میں ھم دیکھتے ھیں کہ زمینداروں کو خود کاشت کرنے کے لئے ۳ فیملی ھولڈنگ زمین چھوڑی جا رھی ھے - لیکن یہاں ساڑھے چار گنا انعامداروں کے لئے کیوں چھوڑجا رھا ھے؟ آخر یہ تفرقہ کس بناء پر رکھا گیا ھے؟

ان سے کسی انعامداروں کے حقوق کو نقصان نہیں پہنچیگا جو ان زمینات پر بحیثیت قولدار
کافی عرصہ سے قابض ہیں اس پر ہمیں سوچنا ہے - کئی آنریبل ممبرس اس بارے میں
اپنے خیالات ظاہر کرچکے ہیں - لیکن حکومت ان باتوں پر قطعاً سوچنے کے لئے تیار نہیں
رہتی - جب یہ مانگ کی جاتی ہے تو محض بحث کے لئے یہ کہدیا جاتا ہے کہ اس میں
کوئی ارتھ अर्थ نہیں ہے جو ہم چاہتے ہیں وہی کرتے ہیں - تو میں
سمجھتا ہوں کہ یہ بھی غلط فہمی پر مبنی ہوگا - اس بل میں کہا گیا ہے کہ زمانے کے
لحاظ سے انعام ابالیشن بل لا رہے ہیں لیکن میں سمجھتا ہوں کہ زمانے کے لحاظ سے
ہمیں ایک قدم اور آگے بڑھانا چاہئے - چھوٹے کسانوں کو زیادہ سے زیادہ فائدہ
پہنچ سکے اس پالیسی کے تحت ہمیں غور کرنا چاہئے - میں امید کرتا ہوں کہ آنریبل موور
اس پر سوچینگے اور جو امنڈمنٹس بھی عوامی نقطہ نظر سے اور قولداروں کی بیدخلی کو
روکنے کے سلسلہ میں آئینگے اون پرغورکرکے اپنے اچھے کواپریشن کا اظہار کرینگے
اس امید کے ساتھ میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں -

* شری کے - وینکٹ رام راؤ (پدامنگل) :- مسٹر اسپیکرسر - دو دن سے ہاؤز میں اس بل پر مباحث ہو رہے ہیں - میں زیادہ وقت لینا نہیں چاہتا - در اصل اراضیات انعامی کی چاہے ہمارے اسٹیٹ کی ہوں یا کسی اور جگہ کی ایک لمبی داستان ہے - انعامات جو عطیہ سلطانی کہلائے جاتے ہیں اونکی ایک لمبی کہانی ہے کہ کسطرح اراضیات انعامی کا سلسلہ جاری ہوا کب منتخب اجرا ہوئے - تحقیقات انعامی کے وقت کسطرح حقوق کا استحکام کیا گیا اسپر ہم کوئی دھیان دینا نہیں چاہتے لیکن جو حالات ہیں اونکے لحاظ سے حکومت کی جانب سے یہ اقدام کیا گیا ہے کہ کسی طرح زمین کے سوال کو حل کیا جائے - حکومت نے اس مسئلہ کو حل کرنے کے لئے چند تدابیر اختیار کئے ہیں- چنانچہ ہمارے اسٹیٹ میں صرفخاص کو ختم کیا گیا - اسکے بعد جاگیرات کو ختم کیا گیا اور اسکے بعد بٹہ داروں کے بارے میں قانون لگانداری نافذ کیا گیا اور اسکے بعد کی چوتھی کڑی یہ بل ہے - اس منشاء کا اظہار کیا گیا ہے کہ اراضیات انعامی بغیر کسی معاوضہ کے غیر مشروط طور پر حاصل کرلئے جائیں - یہ صحیح نہیں ہے - اس مقصد کے تحت ایک قانون سنہ ۱۹۵۲ع میں نافذ کیا گیا تھا جس میں فی روپیہ ۲ آنے لئے جا رہے تھے- لیکن اوس قانون سے ضروریات پورے نہ ہونے سے یہ قانون بنایا گیا ہے - بعض ہمارے دوست اسکو نگیٹیولی (Negatively) دیکھ رہے ہیں - پازیٹیولی (Positively) دیکھنا یا کوئی کنسٹرکٹیو (Constructive) سوجھاؤ دینا نہیں چاہتے - میں ھاؤز کے سامنے کہنا چاہتا ہوں کہ اس قانون سے یقیناً بڑے لینڈ لارڈ یا بڑے انعامدار کو کوئی سہولت نہیں ہے - اسکی روسے انعامداری کو برخاست کیا جا رہا ہے - البتہ اس میں چند مستثنیات رکھی گئی ہیں - چھوٹے انعامدار مثلاً بلوتہ‌دار - سرویس انعام - سیت سندھی - نیرڑی وغیرہ جو ہیں انکے انعام بحال رکھے گئے ہیں - کہا گیا ہے کہ بٹی بیگاری کا سلسلہ انعامات ختم کردیں تو بٹی ختم ہوجائیگی- یہ بالکل غلط فہمی پر مبنی ہے - یہ بلوتہ‌داریاں یا سرویس انعام نیرڑیوں یا

سیت سندھیوں کو جو دیا گیا ہے وہ پنی بیگاری کے لئے نہیں دیا گیا ہے - جو لوگ اس غلط فہمی میں مبتلا ہیں وہ مہربانی کرکے ذرا اون کشتیات وغیرہ کو دیکھیں جنکی روسے یہ اراضیات دیگئی ہیں -

شری کے - ایل - نرسمہا راؤ (ینندو - عام) :- قواعد میں تو ہے لیکن عملاً کیا ہورہا ہے ؟

شری کے - وینکٹ رام راؤ :- میں عرض کرونگا کہ یہ صحیح نہیں ہے چونکہ اراضیات انعامی دئے گئے ہیں اسلئے پنی بیگاری لیجاتی ہے - در اصل ان انعامات کے دینے کی وجہ یہ تھی کہ کسی گاؤں کو بسانے کے لئے وہاں کے انتظامات اور وہاں کے کاروبار کو مقامی لوگوں کے تفویض کرنے کے لئے اور تحریص پیدا کرنے کے لئے یہ اراضیات بطور انعام دئے گئے ہیں - ان اراضیات کے دینے کا مقصد یہ نہیں ہے کہ پنی بیگاری کا وہ معاوضہ ہیں - پنی بیگاری کے طریقے کو جب تک ہم دوسرے طریقوں سے ختم کرنے کی کوشش نہ کریں یہ ختم ہونے والا نہیں ہے -

چیریٹیبل انسٹیٹیوشنس (Charitable Institutions) کے بارے میں میں کہونگا کہ چیری ٹیبل انسی ٹیوشنس کو مصلحتاً رکھا گیا ہے - انعامی اراضیات پبلک پربز (Public Purpose) کے لئے دئے گئے ہیں - مثلاً کسی مدرسہ یا دھرم شالہ کے لئے دئے گئے ہیں جن سے بلا لحاظ مذہب و ملت استفادہ کیا جاسکتا ہے - اگر ان اغراض کے لئے کوئی اراضی انعام ختم کی جائے تو اس سے کسی کا کیا نقصان ہے - اس میں شک نہیں کہ گورنمنٹ کا نقصان ہے لیکن گورنمنٹ نے اسٹیٹ کے حالات کے پیش نظر ان اراضیات کا محاصل معاف کردیا ہے - ان اراضیات پر قانون لگانداری کا اطلاق نہیں ہوتا - تمام اس قسم کے انسٹیٹیوشنس کے انتظام کے لئے کمیٹیاں مقرر کی گئی ہیں - پجاریوں پر کوئی ذمہ داری نہیں ہے - وہ صرف نگرانی کرتے ہیں - ایسی صورت میں وہاں کے انتظامات میں اگر کوئی نقائص ہوں تو اونکو اور طور پر دور کیا جاسکتا ہے - لیکن اس قانون کو جس نقطہ نظر سے لایا گیا ہے اوس سے گورنمنٹ کو یا کسی شخص کو نقصان نہیں ہے -

دوسرا اعتراض کمپنسیشن سے متعلق کیا گیا ہے اس بارے میں کئی مرتبہ مباحث ہوئے ہیں اور یہ بتایا گیا ہے کہ یہ ایک کانسٹی ٹیوشنل (Constitutional) مسئلہ ہے - ممکن ہے کہ آئندہ کانسٹی ٹیوشن میں ترمیم کی جائے لیکن یہ کہنا قبل از وقت ہے - موجودہ حالات کے اعتبار سے ہمیں کانسٹی ٹیوشن پر چلنا ضروری ہے - ہم کانسٹی ٹیوشن کے کسی پراویژن کے خلاف نہیں جاسکتے - کانسٹی ٹیوشن کے لحاظ سے ہم کسی کی جائداد کو بغیر معاوضہ دئے حاصل نہیں کرسکتے - ہمیں کانسٹی ٹیوشن کی تبدیلی کا اختیار نہیں ہے بلکہ یہ کانسٹیٹیونٹ اسمبلی (پارلیمنٹ) کا کام ہے - اسلئے معاوضہ دینا ضروری ہے اور یہ چیز اپوزیشن کے آنریبل ممبرس کو بھی تسلیم کرنا پڑیگا کہ کانسٹی ٹیوشن کے لحاظ سے معاوضہ دینا ضروری ہے - اب رہا یہ امر کہ کیا معاوضہ دینا چاہئے - اسکے

متعلق یہ کہا گیا ہے کہ کورٹ اسکا تعین کریگی - سپریم کورٹ کے نظائر بھی اس تعین سے موجود ھیں کہ جو معاوضہ دیا جائے وہ ریزن ایبل (Reasonable) ہونا چاھئے ور مارکٹ ویلیو (Market value) کے لحاظ سے دینا چاھئے - اگر واجبی معاوضہ مشخص نہ کیا جائے اور وہ لوگ عدالت میں رجوع ہوں تو ویسی صورت میں ریزن ایبل معاوضہ دینا پڑیگا - اسلئے ماھرین قانون نے معاوضہ کا جو تعین کیا ہے وہ مناسب سمجھا گیا ہے - اس سے معلوم ہوگا کہ ....

شری شرن گوڑہ - انعامدار :- کمپنسیشن اسکی جان ہے - اسکی بنیاد ہے -

شری کے - وینکٹ رام راؤ :- جو جان ہے جو بنیاد ہے جو وہ کانسٹی ٹیوشن کے تحت دینا ضروری ہے - ہم اسبارے میں آزاد نہیں ھیں کہ بغیر معاوضہ کے کسی کی جائداد لے لیں - اگر ایسا کریں تو عدالت سے ایسے احکام منسوخ ہو جائینگے - نتیجہ یہ ہوگا کہ کاشتکاروں کو جو فائدہ پہنچانا ہے وہ بھی نہ پہنچ سکےگا - ہمکو اسبارے میں ٹھنڈے دل سے غور کرنا چاھئے - کانسٹی ٹیوشن اور نظائر کے پیش نظر ہمیں قانون بنانا پڑیگا - اگر میرے فاضل دوست نظائر کے حوالہ سے یہ بات ثابت کردیں کہ کمپنسیشن دینے کا جو پرپوزل ہے وہ صحیح نہیں ہے یا زیادہ ہے تو میں اسکو ماننے کے لئے تیار ہوں - البتہ کمپنسیشن کے تشخص کا جو طریقہ آمدنی پر رکھا گیا ہے وہ ٹھیک نہیں ہے - میں آنریبل منسٹر (موور آف دی بل) سے عرض کرونگا کہ کمپنسیشن کے تشخص کے طریقے کو تبدیل کیا جائے کیونکہ آمدنی کے بارے میں جھگڑے ہوسکتے ھیں - اسکے بارے میں ثبوت لینا تردید پیش کرنا وغیرہ اس قسم کے جھگڑے ہوسکتے ہیں - اسلئے میں کہونگا کہ صحیح طریقہ لینڈ ریوینیو کے لحاظ سے تشخص معاوضہ کا ہوسکتا ہے - لینڈ ریوینیو کا ۱۰ گونا یا ۲۰ گونا جیسی بھی صورت ہو ماھرین کی رائے لیکر تعین کیا جائے تو مناسب ہوگا - ماھرین قانون سے کنسنٹ (Consent) کرسکتے ھیں کہ لینڈ ریوینیو کے ۱۰ گونا یا ۲۰ گونا کتنا معاوضہ دیا جاسکتا ہے - قانوناً جسقدر کم معاوضہ دیا جاسکتا ہے اوسی قدر معاوضہ کا تعین کیا جائے - کم سے کم اقل ترین معاوضہ جسکی کانسٹی ٹیوشن اجازت دے دیا جانا چاھئے -

میں ایک اور چیز عرض کرنا چاھتا ہوں - وہ یہ کہ کمپنسیشن کن صورتوں میں دیا جا رہا ہے ہمکو اسپر بھی غور کرنا چاھئے - ساڑھے چار فیملی ہولڈنگ سے زیادہ اراضی ہو تو اس کے لئے کامپنسیشن دیا جاتا ہے - خواہ زمین انعامدار کے قبضہ میں ہو یا ٹیننٹ کے قبضہ میں ہو یا قابض قدیم کے قبضہ میں ہو - ساڑھے چار فیملی ہولڈنگ قابض کے حق میں چھوڑ کر بقیہ اراضی لیجائے تو کمپنسیشن دیا جائیگا - یہاں لینا اور دینا دونوں اصول مضمر ھیں - ساڑھے چارگونا اراضی جو سیلنگ کی ہے وہ مفت میں دیجائے یہ کچھ ٹھیک نہیں ہے - کاشتکار یا ٹیننٹ جو اس قانون کے اثر سے پٹہ دار ہورہا ہے اس سے معاوضہ لیکر پٹہ کر رہے ھیں - اس میں ایک نقص یہ ہے کہ قابض قدیم یا انعامدار سے حکومت کوئی معاوضہ نہیں لے رہی ہے - ہمارا برتاؤ سب کے ساتھ

یکساں ہونا چاہئے - پروٹکٹیڈ ٹیننٹ اور دوامی ٹیننٹ سے معاوضہ لیتے ہیں تو پھر قابضِ قدیم سے جسے پٹہ داری کے حقوق دئے جارہے ہیں معاوضہ کیوں نہ لیا جائے - جب انعامدار کے لئے ساڑھے چار گونا چھوڑ رہے ہیں تو اوس سے بھی معاوضہ لینا چاہئے . . . .

مسٹر چیرمن :- آپ اور کتنا وقت لینگے؟

شری کے - وینکٹ رام راؤ :- میں ۱۰ منٹ میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں -

مسٹر چیرمن :- پھر تو آپ بعد میں تقریر کیجئے - اب ہم ریسس (Recess) کے لئے برخاست کرتے ہیں -

The House then adjourned for recess till Half Past Five of the Clock.

The House re-assembled after recess at Half-Past Five of the Clock.

[*Shri B. D. Deshmukh (Chairman) in the Chair*]

شری کے - وینکٹ رام راؤ :- مسٹر اسپیکر سر - میں عرض کر رہا تھا کہ جو اراضیات انعامی ہیں وہ اس قانون کے تحت گورنمنٹ کو وسٹ (Vest) ہوجائیں گے - تو پھر جو قابضین ہوں گے خواہ وہ انعامدار ہوں - یا قابضِ قدیم ہوں یا جیسا کہ تین قسم کے ٹیننٹ بتائے گئے ہیں اون کے نام اگر پٹہ ہوگا تو اون سے رقم لی جائے گی - لیکن جیسا کہ ڈرافٹ بل میں بتایا گیا ہے انعامدار قابض سے کوئی معاوضہ نہیں لیا جائیگا - میں گورنمنٹ کو یہ سوچنا دینا چاہتا ہوں کہ اون سے بھی معاوضہ لیا جائے جیسا کہ دوسروں سے لیا جاتا ہے - عام ٹیننٹس اور انعامداروں میں ڈسکریشن (Discretion) کرنے کی ضرورت نہیں ہے - اس کی وجہ سے یکسانیت کا عمل ہوگا - اور اس کی وجہ سے جو نقص اس قانون میں پایا جاتا ہے وہ بھی دور ہوجاتا ہے - اس کے قطع نظر میں یہ کہوں گا کہ یہ ایک جامع قانون ہے اور آج کے حالات کے تحت جو بہتر سے بہتر قانون بن سکتا ہے وہ یہی قانون ہے جو نافذ ہو رہا ہے - لیکن اس کے ساتھ ساتھ مجھے ایک دو چیزیں اسکے بارے میں عرض کرنا ہے - ڈرافٹ بل کے بارے میں یہ بتایا گیا کہ اس کے نفاذ کی تاریخ حکومت اپنے ہاتھ میں رکھ رہی ہے - اوس کے تحت حکومت اس کے دفعات کو وقتاً فوقتاً نافذ کر سکے گی - میں کہوں گا کہ یہ مناسب طریقہ نہیں ہے - جب ہم کوئی قانون بناتے ہیں تو اوس کا نفاذ فوراً ہونا چاہئے - اس لئے اس حد تک اوس میں ترمیم کی ضرورت ہے - اگر تاریخ اشاعت جریدہ سے اس کا عمل ہو تو بہتر ہے - کیوں کہ اس ہاؤز سے یہ قانون پاس ہونے کے بعد اوس کے لئے راج پرمکھ یا پریسیڈنٹ کے اسنٹ (Assent) کی ضرورت ہوگی تب کہیں وہ نافذ ہوگا اور اس اثناء میں حیدرآباد اسٹیٹ میں بجز اون دو قسموں کے انعامات کے کوئی اراضی انعام باقی نہیں رہے گی - پورے اراضیات انعام گورنمنٹ میں وسٹ ہوجائیں گے اور وسٹنگ کا پروسس ایک دم ختم ہوجائیگا - جب

پوری زمین حکومت کو حاصل ہوجائےگی تو پھر اوس کے ڈسٹریبیوشن کی سیڑھی آئیگی ۔ اوس کے لئے قواعد بند ہونگے اور قواعد بننے کے بعد زمینات ری الاٹ (Reallot) کئے جائیں گے ۔ چونکہ حکومت کے احکام کا منشاء یہ ہے کہ رقم انعامی اراضیات کی اقساط میں وصول کرنا ہے اس لئے جلد از جلد اس قانون کو نافذ کیا جائے تو حکومت کو فائدہ ہوگا ۔ اس کے علاوہ میں یہ بھی عرض کرونگا کہ جہاں تک ہوسکے ٹیننسی ایکٹ اور اس قانون میں مشابہت پیدا کرنی چاہئے ۔ کیوں کہ یہ دیکھا جا رہا ہے کہ دونوں قوانین میں بعض بعض مقامات پر اختلافات ہیں ۔ اوس کے علاوہ اس قانون سے یہ بھی ظاہر ہو رہا ہے کہ وہ تابع ٹیننسی ایکٹ رہےگا ۔ تمثیلا میں عرض کرونگا کہ اگر کوئی شخص پروٹیکٹیڈ ٹیننٹ سے دفعہ (۴۴) قانون لگانداری کے تحت اراضی حاصل کرناچاہے تولازمی طور پر پروٹیکٹیڈ ٹیننٹ کے پاس کم از کم بیسک ہولڈنگ کی ضرورت ہوگی ۔ اگر پروٹکٹیڈ ٹیننٹ کے پاس اس سے کم اراضی ہے تو پھر اوس کو بیدخل نہیں کیا جاسکے گا ۔ اسی طرح سے اس میں بھی ہونا چاہئے ۔ اگر کسی صورت میں یہ ضرورت داعی ہو کہ انعامدار کو پروٹیکٹیڈ ٹیننٹ یا آرڈینری ٹیننٹ سے کوئی اراضی دلائی جائے تو دفعہ (۴۴) ٹیننسی ایکٹ کا تعلق اس سے بھی متعلق رہے ۔ اس کی وجہ سےجونقص اس قانون میں پایا جاتاہےوہ دور ہو جائےگا ۔ قانون کے تحت جو حقوق ٹیننٹ کو ملتے ہیں وہ ملنے چاہئیں ۔ اس کا یہ مطلب نہیں کہ بعض صورتیں جو ٹیننٹس کے خلاف ہیں وہ بھی لاگو کردئے جائیں ۔ مثلا یہ کہ اگر کسی پروٹکٹیڈ ٹیننٹ کو قانون لگانداری کے تحت کوئی اراضی خریدنا ہے تو اوسکے کمپنسیشن کی ادائی کے لئے بہ ہزار دشواری اوس کو رقم فراہم کرنی پڑتی ہے ۔ اس لئے وہاں آٹھ سال کے اقساط بھی مقرر ہیں ۔ لیکن یہاں پر دیکھا جائے تو کمپنسیشن بہت کم ہے ۔ اس لحاظ سے اس قانون میں بھی بعض ایسی صورتیں ہیں جو پروٹکٹیڈ ٹیننٹ کے لئے اچھی ہیں ۔ اس میں کوئی قباحت کی بات نہیں ہے ۔ اوس کے بعد قابض قدیم کی تعریف ہے ۔ میں سمجھتا ہوں کہ قابض قدیم کی جو تعریف یہاں کی گئی وہ مذبذب اور مبہم ہے ۔ عدالتوں میں جانے کے بعد اس کی تعبیر مختلف طور پر ہوگی جس کا نتیجہ یہ ہوگا کہ مقدمہ بازی ہوگی اور حقیقی انصاف ہونے میں خلل واقع ہوگا ۔ اس لئے قابض قدیم کی معین تعریف ہونی چاہئے ۔ ہمارے پاس قانون کے لحاظ سے قابض قدیم کا رتبہ اراضیات انعامی کے بارے میں قائم ہے ۔ اگر ترتیب منتخب سے قبل کوئی شخص قابض ہےوہ قابض قدیم کہا جائےگا ۔ اوس کے بارے میں اصول یہ ہے کہ اوس کو اراضی سے بے دخل نہیں کیا جا سکیگا ۔ وہ اراضی چونکہ عطیہ ہےجو منتخب کے ذریعہ ایک شخص کو دی گئی ہےاس لئے ریوینیو بھی اوس شخص کو دیا جائےگا ۔ اور جو حقوق اور ذمہ داریاں عام پٹہ داروں کی ہیں وہی اس کے لئے بھی ہیں لیکن مدت کا تعین نہیں ہے ۔ قابض قدیم کی تعریف کے سلسلہ میں یہ اعتراض کیا گیا ہے کہ جو شخص بارہ سال سے قابض ہےاور ڈاکیومنٹ (Document) کی رجسٹری نہیں ہوئی بلکہ معمولی دستاویز ہی کی بناء پر عمل ہو رہا ہےاوس کو بھی قابض قدیم قرار دیا جائے ۔ یہ اصولا صحیح نہیں ہوسکتا ۔

اگر اوس کے حقوق ملکیت دلانا ھی ھےتو دوسرے ذرائع اختیار کئے جاسکتے ھیں لیکن قابض قدیم کی تعریف اس سے متعلق نہیں ھوسکتی ۔ اس قانون میں قابضین کی کیٹیگوریز (Categories) کی گئی ھیں یا تو وہ انعامدار ھونا ھےجو اس قانون کے پہلے سے ھی قابض ھے۔ ایکن کسی نہ کسی وجہ سے کسی دوسرےانعامدار کے نام منتخب جاری کیا گیا ھے ۔ یہ پیچیدگی بھی ھوسکتی ھے۔ اس کے بعد یہ بھی طئے ھوا کہ ایسے قابض انعام کو بے دخل نہیں کیا جاسکے گا ۔ اوس کے حقوق کلیتاً مالک اراضی کے ھوں گے اور جو مالگزاری گورنمنٹ کو دی جاتی ھےوھی اوس کو دی جائے گی ۔ یہ صراحت اس قانون میں بھی ھوجائے تو مناسب ھے۔ اگر (۱۲) سالہ قابض کو قابض قدیم قرار دیا جائے تو اڈورس پوزیشن (Adverse position) ھونا چاھئے لیکن ایسی اڈورس پوزیشن اراضی انعام کے بارے میں نہیں ھوسکتی ۔ دوسرے دفعات بھی ایسے ھیں جن کے تحت تمام اراضی گورنمنٹ کو وسٹ ھوجائے گی ۔ اور پروٹیکٹیڈ ٹیننٹ وغیرہ کی ذمہ داریاں گورنمنٹ کو وسٹ ھوجائیں گی اور اوس کے بعد وہ ری الوکیٹ (Allocate) ھوں گی ۔ اس لحاظ سے زائد از بارہ سال کے جو قابض قدیم ھیں اون کو قابض قدیم کی تعریف میں لینے کی ضرورت نہیں ھے ۔ اس کے بعد جو دوسرے لوگ قابض ھوں گے وہ پروٹکٹیڈ ٹیننٹ کی تعریف میں آجائیں گے ۔ پروٹکٹیڈ ٹیننٹس ۔ پرمیننٹ ٹیننٹس اور وہ قابض جو بہ حیثیت قولدار ھیں اور نان پروٹکٹیڈ ٹننٹ ھیں اون تینوں کی ذمہ داری اور حقوق مساوی ھیں ۔ اب یہ کہنا کہ جو شخص بارہ پندرہ سال سے قابض ھے یا کوئی معاھدے کی بناء پر قابض ھےاوس کو قابض قدیم قرار دیا جائے تو پیچیدگیاں ھوں گی کیوں کہ گورنمنٹ کے مقابلہ میں تو (۶۰) سال کا قبضہ ھونا چاھئے تب ھی حق ملکیت حاصل ھوں گے ۔ غرض یہ کہ اس میں پیچیدگیاں ھیں ۔ ایسے حالات پیدا کرنے کا نتیجہ یہ ھوگا کہ لوگ عدالت میں جائیں گے وکلاء دونوں کو پریشان کریں گے اور بجائے فائدہ کے نقصان ھوگا ۔ اس کے بعد اڈمنسٹریشن اف جسٹس (Administration of Justice) کے لئے جو طریقہ رکھا گیا ھے میں کہوں گا کہ وہ صحیح ھے۔ یہاں کلکٹر کو کمپنسیشن مقرر کرنے کا اختیار دیا گیا ھےاور یہ بھی اختیار دیا گیا ھے کہ اگر کوئی شخص فوراً اس کے متعلق درخواست دے تو ٹریبیونل کو ریفر (Refer) کیا جا سکتا ھے ۔ اس ٹریبیونل میں ایک ایسا شخص بھی رھےگا جس کا درجہ ڈسٹرکٹ جج سے کم نہ ھو ۔ اور ڈسٹرکٹ جج کا درجہ حاصل کرنے کے لئے کم ازکم ۱۰ سالہ پریکٹس کی ضرورت ھے ۔ گویا وہ شخص کافی تجربہ کار ھوگا ۔ اس لئے امید ھےکہ ھر طبقہ کے لئے انصاف ھوگا ۔ اس کے علاوہ کلکٹر کے فیصلہ کی ناراضی سے ریوینیو بورڈ میں اپیل کرنے کی ضرورت نہیں ھے بلکہ اوس کی اپیل ٹریبونل ھی سماعت کریگا ۔ اور اوس کے بعد ھائی کورٹ میں بھی اپیل ھوسکے گی ۔

ان حالات میں موور آف دی بل جتنی ترمیمات ھیں فوراً نافذ کرنے کے بارے میں انعامداروں سے کچھ معاوضہ وصول کرنے کے بارے میں اور قانون لگانداری کے بعض سکشنس کو لینے کے لئے معمولی سی ترمیمات کرلیں تو یہ بہتر سے بہتر قانون ثابت ھوگا ۔

اور میں عرض کرتا ہونکہ انعامداروں سے بڑھکر ٹیننٹس اور قابضین کو فائدہ ہوگا ۔ البتہ اس کے لئے کوشش کرنے کی ضرورت ہے ۔ اگر اس قانون کے بارے میں غلط فہمی پیدا کریں اور یہ کہتے پھریں کہ اس سے انعامداروں کا فائدہ ہو رہا ہے ۔ چار ٹیبل انسٹیٹیوشنس ہی فائدہ اٹھارہے ہیں اکسپلائٹ کررہے ہیں تو اس سے جو فائدہ ہوسکتا ہے وہ نہوگا ۔ اسلئے ہاؤز سے میری یہ اپیل ہے کہ وہ اسکو صحیح اسپرٹ میں سمجھیں ۔

اسکے بعد ترمیات کی حدتک جیسی ترمیات مناسب سمجھا ہیں نے پیش کی ہیں۔ اگر کنسٹرکٹیو سو چنائیں دیسکے ہیں ۔ اگر یہ ریزنیبل ہیں خواہ وہ ادھر سے آئیں یا اودھر سے انکو قبول کیا جائیگا ۔

*శ్రీ కె. రామచంద్రారెడ్డి: (రామన్నపేట)—మిస్టర్ స్పీకర్, సర్,

నిన్నటినుంచి ఈ ఇనాములరద్దు బిల్లు మీద చర్చలు జరుగుతున్నాయి. ఈ చట్టం ప్రధానంగా అరాజీమక్తా, అగ్రహారం, శేరీ ఈనాముల భూములకు వర్తిస్తుంది. మిగతా ఈనాములకు ఈ చట్టం వర్తించదు. మొత్తం హైదరాబాదు స్టేటులో ఈ భూముల సంఖ్య తీసుకుంటే బలవత్తా ఈనాములు గాని, సేత్సిందీ ఈ నాములుగాని దేవాలయ ఈనాములుగాని, దాదాపు ౧౩, ౧౪ లక్షల ఎకరాల భూమి వున్నది. దేవాలయ ఈనాముల భూమి 3 3/౪, ౪ లక్షల ఎకరాలున్నా బలవత్తా ఈనాముల పేరుమీద వున్నది అయిదారులక్షల ఎకరాలున్నా, షుమారు ఇది ౧౦ లక్షల ఎకరాలదాకా మినహాయిస్తే, ఇక మిగిలేది ౪ లక్షల ఎకరాలు మాత్రమే దాదాపు వనపర్తి గద్వాల్, కొల్లాపూర్ సంస్థానాల్లో లక్ష ఎకరాలపైన వుంది. ఈ విధంగా కొద్దిమంది వ్యక్తులకు మేలు చేయడానికి ఈ చట్టం తీసుకు రాబడింది. ఇక్కడ బలవత్తా ఈనాముల గురించి చెప్పారు. గ్రామాలలో ప్రజలకు ఉపయోగపడే సేవ చేయడానికి ఆ రోజులలో, ఆ ఈనాములు యిచ్చారనే విషయుం అందరికీ తెలుసు. కాని ఆచరణలో ఏమి జరుగుతున్నదంటే దాదాపు కొన్ని సంవత్సరాలనుంచి ప్రజలలోపల, ఉద్యోగస్తులకు కేవలం. చాకిరీ, వెట్టి చేయడానికి, ఇవ్వబడ్డాయని తెలుస్తుంది. అధికారులు, వతన్దారులు దానిని ఉపయోగిస్తున్నారని అందరూ వప్పుకొంటున్న విషయమే. వెట్టి రద్దుకు చట్టమయితే వుంది. కాని ఆచరణలో ఏమి జరుగ్గుతున్నది. ఒక ఉదాహరణ ఇస్తాను. ల్యాండ్ సెన్సస్ (Land Census) గ్రామాలలో ౧౦, ౧౫ మందిని తీసుకొనిపోయి వారికి ఏమీ ఇవ్వకుండా పని చేయించుకొంటున్నారు. పైగా ఏమని చెబుతున్నారంటే "మీరు వెట్టికి వస్తేనే ఈనాములు దక్కుతాయి. లేకపోతే లేదు" అని చెబుతున్నారు. కాబట్టి ఈ విధంగా బీద ప్రజానీకంచేత వూరికే పని చేయించుకొంటున్నారు. ఆ శాసనాన్ని అమలులో పెట్టడానికి ప్రభుత్వం ఏమీ ప్రయత్నించడం లేదు. ఈ లోపాలను గురించి మంత్రులకు రిప్రెజెంటు చేశాము కూడా, కాని ఇంతవరకు ఆచరణలో పెట్టలేదు. ఈ విషయంలో ప్రభుత్వం పూర్తిగా ఫైల్యూర్ (Failurc) అయింది. వెట్టి తీసుకోకూడదని శాసనాలు చేశారు, కాని .ఆచరణలో పెట్టుటలేదు. ఈ భూములకు పట్టాలుచేస్తే బాగుంటుంది. ఆ విధంగా పట్టాచేస్తే వచ్చేనష్టమేమిటని నేను అడుగుతున్నాను. అలా పట్టా చేస్తే లక్షలాది ప్రజానీకంనుంచి వెట్టి తీసుకొనుట ఇక పోతుంది. పట్టా చేయుటవలన వెట్టి దూరం కాగలదు. పట్టా చేసిన తరువాత "మాపేర.పట్టా అయినది కాబట్టి వెట్టి చేయు నక్కర

లేదు" అని మానసికంగా వారిలో భావం ఏర్పడుతుంది. ఇప్పుడు ఆచరణలో ఆ చట్టం నిరుపయోగంగా వున్నట్లు చూస్తున్నాం. అందుకొరకు పట్టాచేయడం అవసరమని చెబుతున్నాను. ఆ ఈనాములనన్నీ ఈ చట్టంలోకి తీసుకు రావాలి.

తరువాత దేవాలయాల గురించి, అక్కడ పూజచేయకూడదని కాదు. పూజకు అయ్యే ఖర్చులు యివ్వకూడదని మేము చెప్పటలేదు. తప్పనిసరిగా దేవాలయాలను కూడా, సంరక్షించాలి. ఇప్పుడు ఈ దేవాలయాలకు కమిటీలు ఏర్పడ్డాయి. కాని ఈ కమిటీలు ఏమి చేస్తున్నాయి. ఉదాహరణకు సూర్యాపేట తాలూకా అరవపల్లిలోని దేవాలయానికి వెయ్యి ఎకరాల భూమి వున్నది. దాదాపు నూరు సంవత్సరాలనుంచి అక్కడ రైతాంగం ఇళ్ళు కట్టుకొని, గుడిసెలు వేసుకొని ఆ భూములు సేద్యం చేసుకొంటూ వస్తున్నారు. ఈ మూడు నాలుగు సంవత్సరాలనుంచి అక్కడ కమిటీ ఏర్పడింది. వారు మునాఫా పెంచి హర్రాజు పెడుతున్నారు. కాని ఆ బీద రైతులు తీసుకోలేక పోతున్నారు. అది ఎక్కువ డబ్బు చెల్లించినవారి చేతుల్లోకి పోతోంది. నూరు సంవత్సరాలనుంచి సేద్యం చేస్తున్న రైతుల స్థితిగతులు ఏమిటి? అని ఈ రైతుల గురించి ప్రభుత్వము ఏమి ఆలోచించుటలేదు. కనీసం ఈ రైతులను అక్కడ భూమి నుండి బేదఖలు చేయకుండా గ్యారంటీ ఇవ్వడానికి చట్టం తీసుకరావడం అవసరం. ఆ విధంగా బీద రైతులను రక్షించడానికి చట్టం ఎందుకు తీసుక రారని ప్రభుత్వాన్ని అడుగుతున్నాను. దేవాలయ భూములు సాగుచేసే రైతులకు రక్షణ ఏమీ లేదు. దాదాపు 3 లక్షల ఎకరాల భూమి ఈ రైతాంగం చేతుల్లో వుంది. ఈనాందార్లను నూటికి ౨౦, ౨౫, ౮౦ వరకు నష్టపరిహారం యిప్పించడానికి ఈ ప్రభుత్వం సిద్ధంగా వుంది. కాని బీద రైతులకు ఏమి రక్షణ కల్పిస్తుందో? దేవాలయ భూములను సాగుచేసే రైతులకు కూడా చట్టంలో రక్షణ కలిగించాలి. మాల్ గుజారీ పేరుమీద వచ్చేది వసూలు చేసి ప్రభుత్వం వాటిని కాపాడ వచ్చును.

ఈ చట్టాన్ని చూసిన తరువాత ఇంకొక విషయం ఏమి తేలుతోందంటే, అసలు ఈనాం భూమి ఆచరణలో రద్దయిపోయింది. ఇక్కడ గౌరవ సభ్యులు చెప్పారు. గద్వాల్, వనపర్తి, కొల్లాపూర్, ఈ పెద్ద పెద్ద సంస్థానాలవారు ౧౦ సం. లు ౫ సం.లు రకం యిచ్చే పద్ధతిని, అమ్ముకొన్నారు. ఆచరణలో దాదాపు ఈనాం భూములు రద్దయిపోయినట్లేనని ప్రజలు కూడా అనుకొంటున్నారు. కాని ఈనాందార్లకు ప్రభుత్వం హక్కులు కల్పించి ఈ చట్టంద్వారా నూటికి ౮౦ వరకు నష్టపరిహారం యిప్పించడానికి ప్రయత్నిస్తోంది. మేముకూడా భారత రాజ్యాంగ చట్టాన్ని అంగీకరిస్తాం. దానిని కాదనడం లేదు. దానిలో నష్టపరిహారం యివ్వాలని వుంది. కాని నూటికి ౬౦, ౨౦, ౮౦ యివ్వాలని ఆ రాజ్యాంగ చట్టంలో ఎక్కడా రాసిలేదు, నూటికి ౨౫, ఎందుకు యివ్వాలి? ౧ ఎందుకు యివ్వకూడదు? ఇది చూస్తే, చితికి పోతున్న ఈనాందార్లను, జమీందారీ వర్గాన్ని చట్ట రూపంలో యింకా కొన్నాళ్లు కాపాడడానికి ఇటువంటి చట్టాలు తీసుకు రాబడుతున్నాయని స్పష్టంగా తేలుతోంది. భారత రాజ్యాంగ చట్టప్రకారం నష్టపరిహారం యివ్వాలంటే నూటికి ౧, 3, ౪, ఎందుకు యివ్వకూడదు? ప్రజానీకం యొక్క డబ్బు తీసికొని నూటికి ౨౦, ౨౫ ఎందుకు యివ్వాలి? ఈనాందార్లు, ఈ జమీందారీ వర్గం ప్రజానీకంనుండి శిస్తులు వసూలు చేసుకు పోతున్నారు. గద్వాల్‌లో పోలీసుచర్య కాలంనుండి ఈ అన్యాయాన్ని ప్రజలు నిరశిస్తున్నారు. కాని ప్రభుత్వం ఈనాందార్లను రక్షించడానికి

సిద్ధం అవుతోంది. ఈనాంలు పూర్తిగా రద్దు అయిపోతాయని చట్టంలోవుండినా, చితికి పోతున్న ఈనాందార్లకు మాత్రం ౨౦ ఏళ్లవరకు ఈ ప్రభుత్వం డబ్బు యిప్పిస్తోంది. ఈ నష్టపరిహారం రెండు విధాలుగా వుంది. నాలుగున్నర కుటుంబ కమతాలకు మించిన భూమి వున్నవారికి పంటకు పది రెట్లు యివ్వాలని, సాగు జరగని భూములకు నాలుగు రెట్లు యివ్వాలని, రెండు విధాలుంది. రాజ్యాంగ చట్టంలో ఇంత పర్సెంటు యివ్వాలని ఎక్కడా లేదు. కాని ఆ రాజ్యాంగ చట్టాన్ని సాకుగా తీసుకొని జమీందార్లకు, ఈనాందార్లకు, లక్షలాది రూపాయలు నష్టపరిహారం క్రింద యిస్తున్నారు. ఇదంతా చూస్తే, జమీందారీ వర్గాన్ని కాపాడడానికని భోధ పడుతోంది. రైతాంగంయొక్క హక్కులను గుర్తించకుండా ఈ చట్టాన్ని తీసుకురావడం జరిగింది. దవా మీ కౌలు అనగా పర్మనెంటు కౌలుదార్లు ఎవరైతే వున్నారో ౧౯౫౦కి పూర్వం వారిని గుర్తించాలని ఈ చట్టంలో వుంది. ఈ షరతు ఎందుకు పెట్టారు. వారు చాలా వరకు అమ్ముకొన్నారు. ౧౯౫౦ తరువాత ఎక్కువ మంది దవా మీకౌలు పొందారు. కాబట్టి ౧౯౫౦ తీసివేసి ఇంతవరకు అందరినీ గుర్తించాలని ఎందుకు పెట్టకూడదని నేను ప్రశ్నిస్తున్నాను? లేనిచో రైతాంగానికి విపరీతంగా నష్టం కలుగుతుంది. కాబట్టి ౧౯౫౦ తరువాత దవా మీ కౌలు పొందిన వారందరిని కూడా గుర్తించాలని నేను కోరుతున్నాను.

తరువాత ఖాబిజె ఖదీము పురాతనం నుంచి వస్తున్నవారినుంచి నూటికి, ౨, 3 కంటె ఎక్కువ లేదు. గోపాల్ పేట్ సంస్థానంలో నూటికి ౨, 3 పర్సెంటు వుంది. మిగతా సంస్థానాలలోని ఖాబిజే ఖదీం లేనే లేదన్న మాట. కాని ఎందుకు తీసుకు వచ్చారు? అరక్షిత, రక్షిత కౌలుదార్ల గురించి వున్నది. అరక్షిత కౌలుదార్లనుంచి భూమిని తీసుకొంటే అతని పేర పట్టా చేస్తే ౬౦ యివ్వాలని వుంది. ఆ రైతాంగం దగ్గరనుంచి ౬౦ ఎందుకు తీసుకోవాలి? ౧౦ ఎందుకు తీసుకో కూడదు? రైతాంగానికి తక్కువలో తక్కువ సౌకర్యం కలిగిస్తూ, సాధ్యమైనంత ఎక్కువ రక్షణలు జమీందార్లకు, ఈనాందార్లకు కలిగించడానికి ఈ చట్టం తీసుకు రావడం జరుగుతోంది. ఈ విషయాలన్నీ వాస్తవమైనప్పటికి "అలా చెప్పడం ప్రతిపక్షం వారికి అలవాటు, వారు, ఎప్పుడూ ప్రభుత్వాన్ని ఎత్తి పడేస్తూంటారు" అని అధికార వర్గం వారు అనుకోకుండా యదార్థమైన విషయాలున్నావా లేవా అని అధికారవంలో కూర్చున్నవారు బాగా ఆలోచించాలని కోరుతున్నాను. దేవాలయ ఈనాములు గురించిగాని, ఇతర ఈనాముల గురించిగాని రైతాంగానికి రక్షణలు కలిగించడానికి అటువైపు సభ్యులుకూడా ప్రభుత్వం మీద వత్తిడి తీసుకు వస్తారని ఆశిస్తూ నేను యింతటితో ముగిస్తున్నాను.

شری کے - وینکٹ رام راؤ (چنا کونڈور) :— مسٹر اسپیکر - جو بل ہمارے سامنے پیش کیا گیا ہے اسکو پیش کرتے وقت خود منسٹر صاحب یہ فرمارہے تھے کہ ہم اس بل کو مساوات لانے کے لئے انٹراڈیوس کررہے ہیں کہاں تک مساوات لا رہے ہیں اور کہاں تک نہیں لارہے ہیں اسکو چھوڑ کر میں بل کے خدو خال اور اسکے جو اثرات ہونے والے ہیں ان پر روشنی ڈالنے کی کوشش کرونگا -

اس میں ایک چیز یہ ہے کہ اس قانون کے ذریعہ فکزیٹی آف ٹینیور یا فکزیٹی آف رنٹ (Fixity of tenure or fixity of rent) کا تحفظ اس رعیت کو جو مذہبی اور خیراتی

انعامداروں کے تحت ھیں ملتا ھے یا نہیں اس قانون سے انکا پروٹکشن ھوتا ھے یا نہیں جنکی کہ تحفظ کی سخت ضرورت ھے ۔ اس معیار سے اگر ھم سوچیں تو پہلے ھی دفعہ (۳) ملتا ھے ۔ اس میں یہ بتایا گیا ھے کہ مذھبی معاشوں سے یہ قانون متعلق نہوگا ۔ میں پوچھتا ھوں کہ ایسی اراضیات پرکاشت کرنے والے ٹیننٹس کے حقوق کا آپ کیا تحفظ کر رھے ھیں ۔ مجھے اسپر زیادہ کہنا نہیں ھے ۔ میں صرف یہی کہونگا کہ جس قانون کو منسوخ کرکے آپ یہ قانون لارھے ھیں اس میں اور اس میں کیا فرق ھے ۔ دفعہ ۳۳ کے ذریعہ جس قانون کو ھم منسوخ کر رھے ھیں اس میں پٹہ کیا جاسکتا ھے ۔ سنہ ۱۹۵۲ع میں وہ نافذ کیا گیاتھا ۔ وہ بھی کانسٹی ٹیوشن کے نفاذ کے بعدھی کا قانون ھے ۔ البتہ بعض مقامات پر اسکا اعلان ھونا تھا ۔ اعلان نہونے کی وجہ سے اسپرعمل نہیں ھوا ۔ اس قانون اور اس قانون کا مقابلہ کریں تو معلوم ھو جائیگا کہ ھم آگے جارھے ھیں یا پیچھے جا رھے ھیں ۔ مجھے یہ کہنے کی ضرورت ھی نہیں کہ پیچھے جارھے ھیں ۔ اس قانون کے تحت تین فریق ھوتے ھیں ۔ ایک فریق حکومت ھے ۔ دوسرا فریق انعامدار اور تیسرا فریق اراضی پر کاشت کرنے والی رعایا ۔ ھمیں اس پر غور کرنے کی ضرورت ھے کہ ان تینوں فریقین کے حقوق کی اس قانون میں کہانتک حفاظت کی گئی ھے ۔ اس میں پہلے حکومت اور انعامدار دونوں کے باھمی تعلقات کا مطالعہ کرینگے ۔ اس قانون کو دیکھیں تو معلوم ھوگا کہ انعامدار کے حقوق حکومت کے مقابلہ میں تو قطعی نہیں ھیں ۔ انعامدار کے حقوق محدود ھیں ۔ کیونکہ حکومت ھر عطا کی مالک کل ھوتی ھے ۔ اور پھر وراثت کی منظوری کے وقت حکومت کو یہ اختیار رھتا ھے کہ چاھے انعام کی وراثت منظور کرے یا نہ کرے ۔ یہ ھر انعام کا قانونی پوزیشن ھے ۔ اور پھر انعامدار چاھے تو انعام سے دستبردار ھوکر اپنے نام پٹہ کرواسکتا ھے ۔ لیکن حکومت تو مالک اعلی کی حیثیت رکھتی ھے ۔ ھمارے پاس انعامات مختلف قسم کے ھیں ۔ بعض سندی ھیں بعض بلا سندی ھیں ۔ بعض تاحیات بحال شدہ ھیں ۔ لیکن حکومت ان سب کی جانچ ایک ھی طریقہ سے کررھی ھے ۔ ایسا شخص جسکا انعام تا حیات بحال شدہ ھے وہ خود حاضر ھو کر جمعبندی میں شریک خالصہ کرکے سالم رقم ادا کرنے پر رضا مندھوتا ھے یا ھوسکتا ھے تو ایسے شخص کے لئے بھی آپ معاوضہ دینے وا لے ھیں ۔ اسطرح آپ محدود مالکوں کو قطعی مالک تصور کر رھے ھیں ۔ یہ عطیات کے منشاء کے مغائر ھے ۔ اب بھی عطیات کی وراثت میں بے سندی انعام ھوتو انعام کا ۱۰ فیصد حصہ شریک خالصہ کرلیا جاتا ھے ۔ اسکے ساتھ ساتھ حکومت ھمیشہ نذرانے یا یکسالہ محاصل یا دو سالہ محاصل وصول کرتی ھی رھتی ھے ۔ اب بھی عطیات انکوائیریز ایکٹ کے ذریعہ جو قانونی موقف ھے اسکو ویسے ھی بحال رکھا گیا ھے ۔ اور حکومت انعامداروں کو ایسے حقوق بھی اب ادا کر رھی ھے جو اس قانون کے نفاذ سے پہلے انہیں حاصل نہیں تھے ۔ اس کا کوئی جواز نہیں ھے ۔ ۲۶ جنوری سنہ ۱۹۵۰ع کو کانسٹی ٹیوشن نافذ ھوا اس سے پہلے انعامداروں کو انعام پر جو حقوق تھے وہ بالکل محدود تھے ۔ وہ محدود مالک تھے ۔ دستور کے آرٹیکل ۳۱ یا ۳۱ (اے) میں رٹراسپیکٹیو افیکٹ (Retrospective effect) کی شرط تو نہیں رکھی گئی ھے ۔ لیکن آپ انہیں یہاں زبر دستی حقوق دے رھے ھیں ۔ کیا اس میں یہی پروگریسیونس (Progressiveness)

ھے - میں تو سمجھتا ھوں کہ اس قانون کے نفاذ سے حکومت کا منشاء سوائے اسکے اور کچھ نہیں کہ انعامی اراضیات سے سالم مالگزاری وصول کی جائے - میں تفصیلات میں تو جانا نہیں چاھتا کیونکہ امنڈمنٹس کے وقت تفصیلی بحث ھوگی - ھمیں یہ دیکھنا ھے کہ اس قانون کا کیا نتیجہ ھوگا - تمام انعامداروں کے حقوق تو اسٹیٹ میں وسٹ ھونگے - اور مالکان کو انکے حقوق کے لحاظ سے مختلف حقوق پہنچتے رھینگے - یہی ھوگا - یہ آپ کیا کررھے ھیں - ایسے انعامدار جو اس سے قبل سرکار کو رقم ادا نہیں کرتے تھے - انکے قبضہ کو تو آپ جیسے کا ویسا ھی رکھتے ھیں مگر اب آپ ان سے سرکاری رقم وصول کرتے ھیں - اور پھر پروٹکٹیڈ ٹیننٹ یا نان پروٹکٹیڈ ٹیننٹ کو قانون آسامیان شکمی کے تحت کچھ حقوق کا تحفظ حاصل ھے - انہیں فکزیٹی آف ٹینیور کچھ حدتک حاصل ھے - اس قانون کے تحت آپ انہیں کوئی حقوق نئے طورپر نہیں دیتے - بلکہ آپ اتنا ھی کرتے ھیں کہ سرکاری مالگزاری جو معاف تھی اسکی وصولی کا انتظام کرلیتے ھیں - اور پھر اتنی چھوٹی سی بات کیلئے انہیں معاوضہ دیا جاتا ھے - یہ کیا انصاف ھے - آپ رعایا کے حقوق کا کیا تحفظ کر رھے ھیں - اس قانون کا آخر کیا منشاء ھے - میں یہ نہیں کہتا کہ یہ قانون ھی نہیں لانا چاھئے - ضرور لانا چاھئے - لیکن آپ اسپر بھی غور کیجئے کہ انعامدار کے حقوق کس حد تک ھیں - انعامدار مرنے کے بعد اس سے کوئی معاھدہ باقی نہیں رھتا - وہ ختم ھو جاتا ھے - آپ اس سے جو محاصل مالگزاری کا کچھ حصہ معاف تھا وہ پورا وصول کرتے ھیں اور اسکی وجہ سے اسکو معاوضہ ادا کرتے ھیں - آپ کانسٹی ٹیوشن کے آرٹیکل (۳۱ - اے) کی آڑ لیکر یہ کہتے ھیں کہ جب ھم سرکاری رقم کا اضافہ کر رھے ھیں تو معاوضہ دیناھی پڑیگا - لیکن جب اسپیشل اسسمنٹ کا قانون آیا خشکی اور تری میں ایک آنہ دو آنہ کا اضافہ ھوا تو کیا آپ نے اس کے لئے کچھ معاوضہ دینے کے بارے میں غور کیا - آپ رعایا پر محاصل میں اضافہ کرتے ھیں تو اس وقت تو کسی معاوضہ کا سوال آپ کے سامنے نہیں آتا لیکن انعام کے بل میں جہاں پہلے سے بھی اتنے حقوق نہیں ھیں اب انہیں قائم کیا جاکر اسطرح پیچیدگی پیدا کی جاتی ھے - کیاحکومت نے بذریعہ بندوبست کسانوں سے یہ معاھدہ نہیں کیاتھا کہ رقم میں کوئی کمی و بیشی نہ ھوگی جیسے کہ انعامداروں کو سرکاری رقم کا کچھ حصہ یا سالم معاف کردیا جائےگا - یہ کیا مضحکہ خیز بات ھے - انکے نام پٹہ بھی کرو اور اوپر سے پیسے بھی دو - انعامات کا یہ حال ھے کہ انعامدار انعامی اراضی کو نہ تو بیع کرسکتا ھے نہ رھن کرسکتا ھے - اسطرح انکے حقوق محدود ھیں - لیکن آپ اس قانون کے بعد انہیں یہ اجازت دے رھے ھیں کہ وہ فروخت کرلیں - اس سے قبل نظام صاحب کے دور میں انکے کیا حقوق تھے - رائیٹ آف پراپرٹی میں فروخت یا بیع کرنے کے جو حقوق انعامدار کو نہیں تھے وہ آج عطا کئے جا رھے ھیں اسطرح وہ آزاد ھو رھے ھیں - آزادی سے حقوق کا استعمال کرنے والوں کو معاوضہ دینے میں کیا جواز ھے - دستور کے تحت کیا جواز ھے - معاشی حیثیت سے کیا جواز ھے - میں سمجھتا ھوں کہ کسی حیثیت سے بھی اسکا جواز نہیں ھوسکتا .....

مسٹر چیرمن :- آپ کتنا وقت لینگے؟

شری کے - وینکٹ رام راؤ :- ۱۰ منٹ لونگا - پروٹکٹیڈ ٹیننٹ سے بھی آپ وصول

کر رہے ہیں پرمیننٹ ٹیننٹ سے بھی وصول کر رہے ہیں - ان تمام لوگوں سے وصول کررہے ہیں اور کچھ حصہ انعامدار کو دے رہے ہیں اور کچھ حصہ اپنے جیب میں ڈال رہے ہیں - حکومت پر اس سے بار نہیں عائد ہوگا - جو کچھ بار پڑنے والا ہے رعایا پر پڑنے والا ہے - آپ کسانوں کو کیا فائدہ پہنچار ہے ہیں - ساٹھ گونا چالیس گونا پچیس گونا مالگزاری کا فائدہ پہنچا رہے ہیں اس میں کونسا اصول مضمر ہے -

حکومت او انعامدار کے حقوق پر تبصرہ کرنے کے بعد میں انعامدار اور کسانوں کے حقوق پر آؤنگا - چھوٹے چھوٹے انعامدار جو ایک ایکڑ یا دو ایکڑ کے ہیں ان لوگوں کے متعلق ہمیں کچھ کہنا نہیں ہے - انکو ری ہیبیلیٹیشن (Rehabilitation) کے طور پر اگر آپ کچھ معاوضہ دینا چاہیں تو دیسکتے ہیں لیکن رانی صاحبہ گدوال راجہ صاحب ونپرتی اسطرح کے راجہ صاحبین وغیرہ کو دیں تو ہمیں اسپر اعتراض ہے - ایسے انعامداروں کو جو کوئی دوسرا سورس آف انکم (Source of income) نہیں رکھنے ہیں انہیں آپ دیتے ہیں تو ہمیں اعتراض نہیں ہے - انعامدار اور کاشتکاروں کے حقوق کی مثا بہت جاگیر داروں او کاشتکاروں کے حقوق سے بہت زیادہ ہے - اسکو بڑی جگہ دیگئی ہے اور اسکو کم جگہ دیگئی ہے - لیکن بعض صورتوں میں اختیارتمیزی کا استعمال کرنا پڑیگا - ایک مثال دینا چاہتا ہوں - دیشمکھوں کوسیریات دیگئی ہیں انکا رسوم دیشمکھی ختم کیا گیا ہے - اون سے آج ڈیوٹی نہیں لیجا رہی ہے - ساورم بھی یہی وہ فروخت کردیگئی ہے - اسی طرح بعض چیزیں حقیقت پر مبنی ہیں - انکے نظر انداز کرنے سے رعایا پر بیجا سختی ہونے والی ہے - ہم یہ تمام چیزیں اسنڈمنٹ کے ذریعہ آپکے سامنے لائینگے - قانون کا جو مقصد بتایا جا رہا ہے وہ صحیح نہیں ہے سوائے اسکے کہ خزانہ میں روپیہ جمع کیاجائے - اسکے سوا کسانوں کا کوئی فائدہ نہیں ہے - "مال مفت دل بیرحم" کے مصداق ہے - اسلئے ہم اسکی تائید نہیں کرسکتے - اتنا کہتے ہوئے میں ختم کرتا ہوں -

Shri V. B. Raju: Mr. Speaker, Sir, This Bill is directed to bring about social legislation and is an improvement over the Bill that was introduced some time ago and was withdrawn later, and also the Inams Enfranchisement Act of 1952. Hyderabad State was a feudal State, and when it was converted into or given a democratic form, certain road blocks were left in the progress of the people. The democratic Government first laid its hand on the biggest feudal, that is, the Nizam; took his personal property, Sarf-e-khas, and gave relief to the cultivators there. The problem that was confronting the Democratic Government always was how best they could come to the rescue of the 'khastkar' or the tiller. The Nizam was followed by the jagirdars in quitting the arena of intermediaries, and then the big landlords came to be considered. The Tenancy Act which was amended, more than once, has definitely brought some relief to the cultivators.

Now, in the series, we have come to the Inamdar. He is not the last man. . .

श्री. रूखमाजी धोंडीबा पाटील (आष्टी) :—माननीय सदस्य अिस बिल के तहत बहुत से मालुमात देने के काबिल और बुद्धिमान हैं लेकिन यहां मेरे जैसे काश्तकारों के प्रतिनिधीभी बैठे हुअे हैं जो अंग्रेजी नही जानते। अगर आप हिंदी में बोलें तो अच्छा होगा।

شری وی - بی - راجو :— آنریبل ممبر میرے دوست ہیں اور میری پارٹی کے ممبر بھی ہیں اون سے میں الگ گفتگو کرکے سمجھا دونگا اس وقت مجھے معاف کریں -

But the Inamdar is not the last man in the series. There is also the last, but not the least, the Vatandar who is the dangerous of all these "Bhootas"—if I may say so—who have trapped the poor 'kashtkar'. With the liquidation of the Vatandari system, we can congratulate ourselves that we have taken away the obstacles in the progress of the poor 'kashtkar'. Our three years of valuable period in the life of this august body have been spent in clearing obstacles and in removing these impediments. The people at large or the comman men, about whom I used to mention in this House more often, find fault with us that we have not been able to bring any positive relief to them. Time and again, our Finance Minister had complained that he had no money to meet the requirements of the common man. It can be justified, because, when these relics were being removed, they were not removed without laying any burden on the tax-payer. The Nizam took a slice of Rs. 50 lakhs; but he later on came to realise that he was taking too much and, therefore, voluntarily surrendered O. S. Rs. 25 lakhs from this year. We have been considering to lessen the burden of the tax-payer by reducing the commutation to jagirdars, also.

Now, when we consider about the Inamdars, I find that some of these Inamdars come in the class of poor workers. I have been watching carefully the speeches made by hon. Members from the Opposition side. I must say that they are contradictory some times, though equivocal also. This is the question of abolishing a system. It is not abolishing Inamdar; it is abolishing inams. After all, what is Inam? Inam is a concession given to a cultivator or a landholder not to pay revenue to the Government. Do my hon. friends want that this concession should be denied to the 'balutadars' and such other people who serve in the villages? Do they mean that this concession should be withdrawn for them also? (*Interruptions*) I request my hon. Friends not to mix up issues. This is not an executive body. On the other hand, this is a legislating body. If an hon. Member has got any grievance about the implementation of any particular thing,

he has got the right of interpellations, resolutions, no-confidence motions, and so on. When we try to bring up a legislation, we shall not be so much worried about the administrative lacuna or the administrative confusion that may be caused if some officer has not properly conducted himself. A legislation should not be so circumvented as to remove that particular thing. I am afraid, we cannot pass legislation for preventing all the mischievous actions of every officer. That is not the way of legislating on a major matter. Let us, therefore, keep the issues separate. I have been very often requesting the hon. Members of this House, more particularly the members of the Opposition, that we have to treat certain things as political, certain things as economic, and certain other things as purely academic in their nature. While considering this legislation, let us by all means concentrate on the economic benefits which this legislation may bring forth.

The first thing that the Government intend to do is to abolish the system. After abolishing the system, what would be the subsequent consequences. In the first place, certain gap will be formed. The Inamdar claims, for good or bad, that certain rights have accrued. The rights are not absolute. What are those rights ? Every hon. Member agrees that the Inamdar has a right to till the land without paying the rent or revenue. Nobody can deny that right. The point is, should he be compensated or not ? Supposing you take away land from the Seth-sindhi, do you want that he also should not be compensated ? Here, there is the poor Inamdar having 10 acres, 15 acres....

Shri A. Guruva Reddy (Siddipet) : The only compensation is that no yetti should be taken.

Shri V. B. Raju : Yetti has nothing to do with this. Let the hon. Member find out a solution as to how yetti can be stopped. There is no difference of opinion in this matter. If yetti is taken by an officer, he should be punished. There is no difference of opinion on this score. What is the use of beating about the bush ? When it is not very much relevant. I am merely confining to the economic benefits and administrative conveniences.

When the Inams are abolished, certain consequences will follow. How have we to meet them ? I shall classify them

in order. All the land will vest with the Government. Government is not a tiller, and Government is not going to start major farming. It has to distribute lands among certain interests which have grown along with the Inamdar. Who are they ? One is the cultivating Inamdar, and another is the so-called kabez-e-kadim. I am not sure whether it is a good term that we are using, and whether it is going to create any confusion. I would request the Government to clarify this and to specify in a clear manner as to what kabez-kadim means. Then, there is the permanent tenant. He cultivates land taken on 'munafa'. The fourth is the tenant-at-will and also the protected tenant. When all these interests are there, the problem is how to distribute this land among them. According to the Opposition Members, this legislation should have been simplified when the Tenancy Act is there, and when it extends to Inams other than services and charitable Inams. When the Tenancy Act applies to them, simply enfranchising and saying that the Inams are abolished; Inamdar is the pattedar, and that he is liable to pay land revenue to the Government, etc., will not do.

The hon. Members will appreciate that the intention of the Government or the intention of the Congress Party is not to make this Inamdar the pattedar of all the land that is his as an Inamdar. A person may hold 15,000 acres; it is a holding and there are several interests on that land. The Government does not like, or the Congress Party does not like, that he should become a pattedar for all the 15,000 acres and then claim full compensation for the land when the Government assumes the management after leaving the 4½ family holdings for him, or that when the tenant wants to purchase the land he should pay the market rate. What the Government desires, or what the Congress Party desires, is that this land must be rationally distributed. Does the opposition agree on this point or not ? I do not think there will be any difference of opinion on the question of rational distribution of this land.

شری کے - وینکٹ رام راؤ:— اس کے پہلے ھی اراضی تقسیم ھو چکی ھے اب کوئی اراضی نہیں بچی -

Shri V. B. Raju: That is to say, the land, as my hon. friend says, has already been distributed. That is about possession. I am not speaking about possession. I am speaking about the right or the title which has got greater value, because we are living in a constitutional age or a parliamentary

age; and in a constitutional or a parliamentary age, right has more value than other things. We want to give a statutory right, *i.e.*, the ownership right to the tenant. Is there any Member who is going to oppose it? This is an improvement over the Tenancy Act. In the Tenancy Act, there is a provision that in an area, which the Government declares as the 'local area', tenants who are in possession of certain lands will become owners and compensation and other things will come later on. When that is our view, *i.e.*, ultimately to make the smaller tillers as the land owners, why should we not take advantage of this legislation? It is estimated that about 6 lakhs of acres may constitute the area in possession of a particular class of Inamdar and these 6 lakhs of acres are going to vest in the Government. Why should we lose the opportunity of making a rational distribution of this land among the four classes of the tenants—the 'Kabez-e-Kadim', the permanent tenant, the protected tenant and the other tenant. In doing so, it is said in the Bill, at the moment, that an area equal to 4½ family holdings should be left to the Inamdar and when calculating this, the land which is under the personal cultivation of that inamdar, *i.e.*, patta land, his own land, should be taken into account. That means, including this land, it should not be more than 4½ times the family holding. Let our friends make suggestions as to the area of the land to be left to the Inamdar—whether it should be 4½ family holdings, or 3 family holdings or whatever it is. We are prepared to consider it. We want to extend the same principle as we are doing in respect of the Inamdars to the other categories also. We do not want to show any favouritism to the Inamdar. So, about the distribution of land, I do not think there is any disagreement. If it is not 4½ family holdings, whether it should be 3 family holdings or 4 family holdings, we can thrash out when we come to the particular clauses.

Then, what are the other consequences that follow? There is the levying of a premium. When the land belongs to Government and when the Government is in need of money, it does not want to be overcharitable. So it levies a premium. It is our suggestion that premium should be levied even on the Inamdar that has been given a patta; he should not be shown any undue favour. I am not speaking about compensation. Let us see that we treat all these categories at par. We can decide what the premium should be. I do not think there is any severe criticism about this in the speeches of the Opposition Members. The quantum of premium is very little. It is not true that Government want to make any money.

Whatever money is taken is only to meet its administrative expenses. We do not want to increase the expenditure on non-nation-building activites and do not want to see that the Five-Year Plan fails. The money that is taken is intended to meet the administrative expenses.

Then, there is the question of compensation. Do our friends agree or not that there is some right accruing—let it be as small as a particle of the sand. If charges are levelled against us that we are compensating the Inamdars, etc. we plead not guilty. This House is constituted under a Constitution; we have got a constitutional sanction. We cannot pick up a portion of the Constitution which is useful and reject the other portion. So, as long as that Constitution is there, whether it is good or bad, we have got to work under that. The only question that can be raised is: What is the reasonable quantum of compensation? There also we are prepared to discuss the matter. We too are not prepared to give any compensation on income basis. We do not want to create or provide more employment to Vakils; we do not want our poor 'riyaya' to be play-things in the hands of Vakils or Courts. We want to link up compensation to the land revenue, which should be the unit or multiple. What should be the number of multiples for compensating? If we decide on all these things, after having agreed on policies, then we need not have any apprehension that we are going to put or drive the tenant to the mercy of the Inamdar or that we are placing the Inamdar at such a level or at such a point that he continues to be a feudal relic. Let us not harbour such feelings. Let us approach this Bill purely from a social and economic point of view and let us see whether we are eradicating and liquidating the old feudal element or not. I think the Members will give that much of credit for the Congress Party that it has done something in that direction. We have paved the way and now we assure that we have kept all these things in view and when determining the premium and compensation we have seen that unnecessary burden will not be put on the treasury, secondly that the tenant will not be over-burdened and thirdly that the Inamdar will not be over-favoured.. When the permanent teanant is paying 'munafa' what is it you are going to levy on him? Supposing the premium works out to less than the 'munafa' will the hon. Members agree to it? Is not the 'Kabiz-e-Kadim' paying land revenue to the Inamdar? Hereafter he will pay it to the Government and to that extent the Government will be compensating the Inamdar. The Bill has got to be judged as a whole and we must have a proper

perspective of it. If we take a small piece out of it and criticise it, we will not be doing justice. So, I request the hon. Members to lay emphasis on the clauses which involve financial implications, but about the rest they are according to the policies that have been laid down in this House from time to time by all the parties sitting together and it is a projection of the same tenancy legilsation which we passed sometime ago in an amended form.

I was waiting to know whether I would be further educated on the other aspects of the Bill, but unfortunately no constructive approach, except criticism, has been put forward for the treasury benches to adopt. Our discussions at the stage of first reading should be such that we can think of some good amendments and bring them up at the stage of second reading. That has to be the approach. I was waiting for such suggestions, but unfortunately there were none. Even now, there is some time and if the hon. Members can give some concrete suggestions it will be better.

శ్రీ కె. యల్. నరసింహారావు :— ఈనాందారులకు డబ్బు ఇచ్చి భూమి కొనుక్కొన్నవారు పర్మనెంటు టెనెంట్‌గా భావింప బడుతున్నారు. వారు దీనివల్ల ఏ విధంగా బెనిఫిట్ పొందుతున్నారో తెలుపవలసి ఉన్నది.

Shri V. B. Raju : This is another category. This is called illegal or illegitimate category. We regularised some such transactions in the Tenancy Act. The point raised has also to be considered, *viz.*, under which category do they come—whether as permanent tenants, or as 'Kabiz-e-Kadim', or as other tenants, and whether the definition of any particular term is to be so elastic as to cover all these people.

It has been brought to our notice that out of ignorance many of these tenants or cultivators have paid heavy sums to these big Inamdars to acquire these lands. We too have got a complaint that many jagirdars of Inam lands grabbed a lot from the tenants and cultivators.

Shri G. Sreeramulu (Manthani) *:* Mr. Chirman, I request that speeches be regulated according to the time-limit.

Shri V. B. Raju : If I had not been disturbed I would have completed my speech in time.

We all want that the Legislation should come into force immediately. The Government had already lost 10 to 12 lakhs of rupess which was included in the last budget.

[*Shri M. Rami Reddy (Chairman) in the Chair*]

As already mentioned, a complaint has been made about fixing up the limit. The whole trouble is that course is still an agricultural economy and about 68% of the population are settled on land, and since there is pressure on land we are so much worried about every acre of land and every individual. Otherwise, we would not have laboured so much about this Bill. We will have, till our industrial development grows, this trouble about legislation on land, which we cannot help. But when we do so, when we deal with the chapter of determining relations on land, let us sit together and let us thrash out the problems.

Mr. Chairman: Since the hon. Minister will reply to he debate at 7 p.m., only 5 minutes can be given to each Member from now.

Several members rose in their seats....

Shri G. Sreeramulu: Mr. Chairman, Sir, I have been trying to speak on the Bill for the last 30 minutes.

شری کے۔ اننت ریڈی :— مسٹر اسپیکر۔ اس بل کے تعلق سے جو بحث و مباحث یہاں ہو رہے ہیں وہ کچھ غلط تصورات لئے ہوئے ہیں - پہلے جو بل اس ہاؤز میں پیش کیا گیا تھا اگر اوس کو اور اس بل کو دیکھا جائے تو معلوم ہوگا کہ وہ بل ایک الگ نوشن (Notion) کے تحت پیش کیا گیا تھا - اور یہ بل ایک الگ نوشن (Notion) کے تحت پیش کیا گیا ہے اس لئے میں نے کہا ہے کہ اس کے پیچھے غلط تصورات کام کررہے ہیں - پہلے بل میں وہ تفصیلات نہیں تھیں جو اس بل میں ہیں -اوس بل کا کلیر کٹ (Clear cut) یہ تھا کہ انعامداروں کے کچھ رائٹس (Rights) نہیں ہیں - اس وجہ سے انہوں نے اوس میں کمپنسیشن کا جزو نہیں رکھا تھا - لیکن بعد میں جو انعامی بل آیا اوس میں یہ غلط تصور ہے کہ انعامداروں کے رائٹس ہیں۔ آنریبل ممبر فرام سکندرآباد نے کہا کہ انعامداروں کے رائٹس ہیں لیکن میں یہ کہوں گا کہ یہ غلط تصور ہے - وہ کونسے محرکات ہیں اور وہ کونسے عناصر ہیں جو اس بل کے لانے میں کام کئے اس کی ڈپتھ میں بھی جانے کی ہمیں ضرورت ہے کیوں کہ حکومتی طبقہ یہ چاہتا ہے کہ اوس کلاز کی تائید کرے جو رمایہ داری کا مکمل نمونہ ہے - میں یہ کہوں گا کہ حکومت اس پرانے بل کو واپس لینے پر مجبور کی گئی اور یہ نیا بل کمپنسیشن دینے کی غرض سے لایا گیا ہے - تو یہ جو رانگ نوشن ہے کمپنسیشن وغیرہ دینے کا وہ باطل ہوجاتا ہے اگر ہم قانون عطیات کے ان جملہ اسٹیجس کو دیکھیں۔ کیوں کہ انعام

جو پچھلے زمانہ میں راجہ مہا راجاؤں یا نظام کی جانب سے دئے گئے تھے وہ ایک ''عطیہ'' تھے - معطی اور معطی‌له کے جو تعلقات تھے ہم اوس کو پرایوٹی جج نہیں کر رہے ہیں - ایک زمانہ میں نظام صاحب دورہ پر تشریف لے گئے - جنگل میں انہوں نے شکار کھیلا - کسی نے ان کی آؤبھگت کی یا ایک جنگل کے چرواہے نے ان کی کچھ خدمت کی تو انہوں نے خوش ہوکر کہا مانگ کیا مانگتا ہے اور ہاتھ اٹھا کر بتلایا تو وہ زمین اسے مل گئی - اس لئے انعام کا جو تصور ہےوہ چیریٹی کا تصور ہے - اس میں لینے والے کی مرضی کو کوئی دخل نہیں ہے - وہاں کوئی رائٹ پیدا نہیں ہوتے - لیکن اگر اس رائٹ کے تصور کو لیکر بل لایا جائے تو وہ بنیادی طور پر غلط ہوگا - اور اس لحاظ سے کانسٹیٹیوشن کا جو واویلا مچایا جا رہا ہےوہ غلط ہے- ہمیں یہ بتلانے کی کوشش کی جا رہی ہے کہ ہمیں کچھ نہ کچھ رائٹ ماننا ہی پڑیگا - اگر ہم کچھ نہ کچھ رائٹ مانیں گے تو ۶۰ پرسنٹ یا ۴۰ پرسنٹ معاوضہ کیوں - جب آپ تھوڑے رائٹ مانتے ہیں تو تھوڑا ہی کمپنسیشن ہونا چاہئے - اس لئے کمپنسیشن کا جزو حکومت نے مجبوراً رکھا ہے اور جب ہم پرانے قانون کو دیکھتے ہیں تو یہ واضح ہو جاتا ہے - ان چیزوں کو نظر انداز کر کے حکومت کے اسٹانڈ کو بجا قرار دینے کی جو کوشش کی جا رہی ہے - میں کہوں گا کہ وہ غلط تصور کے تحت ہے- ابھی ابھی ایک آنریبل ممبر نے کہا کہ اگر ہم سروس انعامس لینڈ جو ولیجس کے نیرڑلی - بلوتہ دار اور سیت سندھی انجام دیتے ہیں اگر ان کو نکال دیں تو انہیں بھی کمپنسیشن دینا پڑیگا - لیکن وہاں تو کمپنسیشن کا سوال ہی نہیں ہے - نیرڑلی سے آپ سرویس ۳۶ روپے انعام کے عوض لیتے ہیں - یہی کا غلط نوشن وہاں آگیا ہے. آپ اس کو معاوضہ دیتے ہیں ....

شری اے - گروا ریڈی :— کم تنخواہ دیکر زیادہ کام لینے کا نام یہی ہے -

شری کے - اننت ریڈی :—تو سرویسس کا جو جزو ہے آپ اس کے لحاظ سے تنخواہ مقرر کیجئے - میرا تو یہ تصور ہے کہ نیرڑلی بلوتہ دار اور سیت سندھی ملازمین کی حیثیت رکھتے ہیں -

They are expected to be Government servants.

They are deemed to be Government servants.

ان کو آپ تنخواہ مقرر کیجئے اور جو میگررمیونریشن انعام کے طور پر دیا جاتا ہے وہ ختم کردیجئے - یہ ہمارا ڈمانڈ ہے- اب یہ سوال کہ ان کو کمپنسیشن دینے کا سوال پیدا ہوگا وہ نہ اٹھے تو ان کو آپ جو اراضی انعام میں دئے ہیں وہ ان کے نام پٹہ کردیجئے اور خدمت کے بدلے ان کو تنخواہ مقرر کردیجئے - اب جو ۳۶ روپے انعام دیا جا رہا ہے اس کے لحاظ سے ۳ روپے ماہانہ تنخواہ پڑتی ہے -

دوسری چیز جس کی جانب توجہ دلائی گئی وہ چار قسم کے لوگ ہیں - قابض قدیم پروٹکٹیڈ ٹیننٹ - نان پروٹکٹیڈ ٹیننٹ اور پرمننٹ ٹیننٹ - ان میں ڈفرنشیٹ (Differentiate) اسطرح کیا گیا ہے کہ کمپنسیشن کے معاملہ میں کچھ زیادہ پریمیس

(Premiums) عائد کئے گئے ہیں ۔ اسطرف سے ایک آنریبل ممبر نے کہا کہ قابض قدیم کو بھی کیوں چھوڑنا چاہئیے اورانکو پریمیمس دینے پر مجبور کرنا چاہئیے ۔ اگر وہ آنریبل ممبر قابض قدیم کی تعریف کو بغور ملاحظہ فرماتے تو معلوم ہوتا کہ اس کی حیثیت متبادل ہے (Analogous to Pattedar and Shikmidar) وہ صرف پٹہ دار کو مالگزاری ادا کرپاہے ایسی صورت میں اسکی حیثیت بھی ایک پٹہ دار کی ہوتی ہے۔اودھرسے یہ بحث کی جارہی ہے کہ قابض قدیم سے جو برتاؤ کیا گیا ہے وہ بجا ہے۔ لیکن کمپنسیشن کا جو سوال اٹھایا گیا ہے وہ بنیادی طور پر غلط فہمی کی وجہ سے اٹھایا گیا ہے جیسا کہ میں نے کہا ۔ اس تھوڑےسے رائٹ کو جسے آنریبل ممبر فرام سکندر آباد نے کنسیڈ کیا وہ انتہائی میگر ہونا چاہئیے ۔ وہ دو تین چار گنا سے کسی صورت میں بھی زیادہ نہ ہونا چاہئیے ۔ وقت کی قلت کی وجہ سے میں تفصیل سے نہیں کہہ سکتا . . . .

श्री. गोविंदराव मोरे (कंधार-आम):—अिनामी लॅन्डस् मे राअिदृस का तस्सवुर है।

شری کے ۔ اننت ریڈی :— اس میں میں یہ کہہ رہا تھا کہ رائٹ اس وجہ سے نہیں ہے کہ وہ عطا کردہ زمینات ہیں ۔ معطی لہ کا سمبندھ میں نے بتایا ہے ۔ معطی لہ کی مرضی کو اس میں دخل نہیں ہے ۔ اس لئے میں یہ عرض کرونگا کہ کمپنسیشن کا جو جزو ہے اسکو نکالدیں ۔

* شری ادھو راؤ پٹیل (عثمان آباد ۔ عام):— مسٹر اسپیکر سے میں یہ رکوسٹ (Request) کرونگا کہ اور بیس منٹ تک ڈسکشن جاری رہے اور آنریبل منسٹر (۴۰) منٹ میں جواب دیں کیونکہ اس بل کو اسطرف سے کافی ڈفنڈ (Defend) کیا جارہا ہے۔

ڈپٹی منسٹرفار ریونیو (شری بی۔ہنمنت راؤ):— ۷ بجے سے جواب کے لئے وقت دیا گیا ہے۔

مسٹر چیرمن :— وہ تو الاٹ (Allot) کیا گیا ہے لیکن ممبرس تقریر کرنا چاہتے ہیں ۔

شری ادھو راؤ پٹیل :— آنریبل منسٹر کو کافی موقع ملتا ہے۔ وہ آئندہ بھی امنڈ منٹ کے وقت جواب دیسکتے ہیں ۔

اسپیکر سر ، انعامس ابالیشن بل کی طرف دیکھنے کی دو نظرئیے ہوسکتے ہیں۔ اٹھارویں صدی کے جو طریقے ہیں ان کو ختم کرنے کے لئے یہ ایک قدم ہے۔ اس لئے میں اس کی تائید کرتا ہوں ۔ اس بل کی ڈیٹیلس سے ظاہر ہوتا ہے کہ جو وسٹڈ انٹرسٹس (Vested interests) تھے اور ان کے جو پریولیجس (Privileges) تھے انکو ختم کر رہے ہیں ۔ لیکن کمپنسیشن دینے کے لئے جس ڈھنگ سے بل پیش ہوا ہے میں سمجھتا ہوں کہ ہمارے ایکٹ میں اور بمبئی ایکٹ میں کافی فرق ہے۔ محض ریوینیو نہ دینا کوئی دلیل نہیں ہو سکتی ۔ انعاموں کی ہسٹری دیکھی جائے تو یہ ایک طرح کے پریولیجس تھے ۔ اسکا اکسپلینشن اسطرح ہو سکتا ہے کہ پرانے زمانہ میں ریوینیو وصول کرنے کے لئے اتنا ایفیشنٹ اڈمنسٹریشن (Efficient administration) نہ تھا اِس لئے چند لوگوں سے یہ کہا گیا کہ آپ ریوینیو وصول

کر کے دیجئیے هم اسکے صله میں آپکو یه زمین دینگے - لیکن اب ان کے یه فرائض نہیں رهے - اب اگر ایک کلکٹر یا منسٹر اپنے فرائض انجام نه دے تو اسکی تنخواہ جاری نہیں رہ سکتی - ماڈرن اکویمنٹس (Modern Equipments) کی وجه سے آج اتنی ترقی هوئی هے که هم ایک جگه سے دوسری جگه پر فوراً هی جا سکتے هیں- کسی گڑبڑ کی صورت میں فوج بھیج سکتے هیں لیکن قدیم زمانه میں یه نا ممکن تھا - اس لئے صوبه داروں کو فوج بھی رکھنے کی اجازت دی گئی تھی - اسیطرح یه ریوینیو کا بھی معامله تھا - لیکن جب ہمارے پاس اسسمنٹ هوا تو تمام اراضیات کے ساتھ انعام کی اراضیات کابھی اسسمنٹ هوا - اور انعامداروں کے فرائض نکال دئے گئے - لیکن انگریزوں کے زمانے میں وہ اسکو نہیں نکالنا چاهتے تھے اس لئے وہ برٹش سامراج کی ایک پالیسی تھی - انہیں سنه ۱۸۵۷ع کا تجربه تھا - راجه مہاراجاؤں کو دکھ پہنچانے اور پرانے طریقوں کو بدلنے سے انہیں نقصان پہنچنے کا اندیشه تھا - رانی لکشمی کے متبنی کا تصفیه نه کرنے کی وجه سے تمام راجاؤں نے ملکرایک هیجان برپا کیا تھا - اس لئے وہ کافی سبق حاصل کئے تھے - اگر سامراجی حکومت کو رکھنا هے تو اسکے ساتھ هی وسٹڈ انٹرسٹس کو بھی رکھنا پڑیگا - اب سماجی حالات بدل چکے هیں اور یه راٹن (Rotten) تصور بھی ختم هونا چاهئے - اب سوال یه هے که هم بھی ایسا هی چاهتے هیں لیکن ٹریژری بنچس کی جانب سے کہا جاتا هے که آرٹیکل ۳۱ آڑے آتا هے - اگر اسکو غور سے پڑھا جائے تو معلوم هوگا - ریوینیو سب سے لیا جاتا هے - اس کا نسٹیٹیوشن میں آرٹیکل ۱۴ بھی هے -

"Equal protection of Law"

کورٹ کے سامنے ایسے نظائر آئے هیں که وہ ریوینیو نه دیں اور اسسمنٹ لیں تو اکوالیٹی نه رهے گی - اس لئے اس کو رائٹ نه تصور کرتے هوئے بلکه پریولیج قرار دیتے هوئے اس کا تصفیه کیا جائے - یعنی انعام ایسا پر مینٹ رائٹ نه تھا جو وراثتاً اسکو ملتا تھا اس لئے وہ پراپرٹی رائٹ نہیں هے - لیکن اس دوران میں در اصل کون مالک تھا - حقیقتاً حکومت اس کی مالک تھی اس وقت یه کنسپشن (Conception) تھا که یه حکومت کی اراضیات هیں - اس لئے اس میں رائٹ ٹو پراپرٹی (Right to property) نہیں هے - میں مثال دیتا هوں که آرٹیکل ۳۱ میں حکومت پر کونسی پابندی عائد کی گئی هے - سب کلاز (۱) میں اسطرح کی پابندی هے -

"No person shall be deplived of his property save by Law"

یعنی غیر قانونی طور پر کسی شخص کو اپنی جائداد سے محروم نه کیا جائے - قانوناً غیرجائز هو تو لے سکتے هیں - اس لئے سب کلاز ۱ اس کے آڑے نہیں آئے گا - سب کلاز ۲ میں لیجسلیچر پر جو پابندی عائد کی گئی هے وہ اسطرح هے -

"No property, movable or immovable, including any interest in, or in any company owning, any commercial or industrial undertaking, shall be taken possession of or acquired for public purpose.."

"Unless the Law provides for compensation for the property taken possession of or acquired and either fixes the amount of the compensation or specifies the principles on which, and the manner in which, the compensation is to be determined and given".

اگر اس جائداد کو قبضہ میں لینا ہے تو پبلک پرپزس (Public purposes) کی صورت میں لے سکتے ہیں۔ آپ تو انکے پاس ساڑھے چار فیملی ہولڈنگ زمین رکھ رہے ہیں، آپ نہیں لے رہے ہیں پھر بھی آپ انہیں معاوضہ دیتے ہیں . . . .

श्री. गोविंदराव नरसिंगराव मोरे - इंटरेस्ट से क्या प्रिव्हिलेज नहीं होता ?

شری ادھو راؤ پٹیل :— انٹرسٹ یہی ہے کہ ریوینیو نہیں دیگا - یہی پریویلیج ہے - سکشن ۱۴ کے تحت کوئی پریویلیج نہیں رکھا جاسکتا - آپ اس کے لئے عطیات کے قانون کو ریپل کر دیجئے - بمبئی میں اسی چیز کو دور کرنے کے لئے وہاں انعام ابالیش ہوئے - پرسنل انعام کی انہوں نے تعریف کرتے ہوئے بتایا کہ اس میں جاگیرات اراضیات اور نقد عطیات رہینگے - ابالش ہونے کے معنی یہ نہیں ہیں کہ گورنمنٹ میں وسٹ ہونگے - وسٹ ہوتے ہیں تو قبضہ لینے کا مفہوم آجاتا ہے - آپ نے یہاں اس پر غور نہیں کیا - آپ انعامداروں کو سپریم کورٹ میں جانے دیتے - ٹرائیل کے طور پر یہ کرتے - لیکن حکومت جو انعامداروں کی رپریزنٹیٹیو اور محافظ ہے اسنے ایسا کرنا مناسب نہیں سمجھا - وہ تو چاہتی ہے کہ جہاں تک ہوسکے انہیں فائدہ پہنچائے - بمبئی میں معاوضہ کس صورت میں دیا گیا وہ میں آپ کے سامنے رکھتا ہوں - کلاز (۵) کا سب کلاز (۲) یہ ہے

Section 5 (2) (*a*) An Inamdar in respect of the Inam land in his actual possession or in possession of a person holding from him other than an inferior holder, referred to in Clause (*b*) below, or

(*b*) an inferior holder holding Inam land on payment of annual assessment only, shall primarily be liable to the State Government for the payment of land revenue due in respect of such land held by him and shall be entitled to all the rights and shall be liable to all obligations in respect of such land as an occupant under the Code or the rules made thereunder or any other law for the time being in force.

مجھے بمبئی کے قانون کا تجربہ ہے - وہاں میرے رشتہ داروں کے نام انعام ہیں - ایک جگہ سکشن (۶) میں لینڈ ریوینیو نہیں رکھا گیا ہے - لیکن ہم لینڈ ریوینیو کو نکالتے ہیں - سب کلاز ۲ بی میں ایسے رول بنائے ہیں کہ اگر کسی کو رائیٹ ہوتا ہے تو وہ سکس ٹائیمس ریوینیو (Six times revenue) خزانہ میں داخل کرتا ہے - اگر حکومت چاہتی تو دوسرے ہاتھ سے کمپنزیشن نکال سکتی تھی جبکہ آپ ان کو

مستقل مالک بنا رہے ھیں - آپ انہیں کیوں مفت میں دیدینے ھیں - آپ نے اس جائداد کا معاوضہ دیا جائداد آپ کی ھوگئی - جب آپ منتقل کر رہے ھیں تو آپ کو قیمت کا تعین کرنے کا اختیار ہے - بمبئی گورنمنٹ نے یہ رکھا کہ ریوینیو کا چھ گونا داخل کریں - آپ اس طرح ۳۱ کو صفائی کے ساتھ اوائیڈ کرسکتے تھے - سکشن (٦) میں یہ ہے کہ

Section 6. Notwithstanding anything contained in any law, usage, settlement, grant compensation, sanad or order but subject to the provisions of this Act, a sum equal to seven times the amount of cash allowance referred to in section 2 (1) (*e*) (*ii*), if any, due to an Inamdar as personal Inam shall be paid to him as compensation in consideration of the extinguishment of his right to receive such allowance.

حکومت کو اس سے کوئی مفاد حاصل نہیں ہے - مفاد اس معنی میں کہ اس کے سامنے فائیو ایر پلان ہے - اور آپ انہیں کافی معاوضہ ادا کررہے ھیں - ایسی غلط ڈرافٹنگ کی گئی ہے کہ اس کا کل انٹرسٹ تو گورنمنٹ میں وسٹ ھوگا - ڈیپریویشن (Deprivation) جو ھوتا ہے وہ دو طریقے سے ھوتا ہے ایک تو ڈسٹرکشن (Destruction) اور دوسرے کانفسکیشن (Confiscation) آپ گیٹنگ پوزیشن آر ایکویزیشن (Getting position or acquisition) نہیں کرتے - انکو جو پریویلیج دیا گیا ہے وہ بند کرتے ھیں - اس لحاظ سے آپ کا پوزیشن اسٹرانگ (Strong) تھا - اور آپ سپریم کورٹ میں بھی اسی کو ریپرزنٹ (Represent) کرسکتے تھے - لیکن ایسا نہیں کیا جاتا اور کہا جاتا ہے کہ اپوزیشن تو بس حکومت پرچار جس ھی لگاتی ہے - مگر آپ اسپر غور کیجئے - سکشن (۳۱) کا میں جو انٹر پریٹیشن (Interpretation) کررھا ھوں وہ ھوسکتا تھا -

[Shri Anna Rao Ganmukhi (Chairman) in the Chair]

اسکے بعد رلیجس انسٹی ٹیوشنس (Religious Institution) کے انعامات بحال رکھنے کی کیا وجہ ہے - ھاں انگریز دور حکومت میں انکا نظریہ یہ تھا کہ یہاں کے لوگوں کے رلیجس معاملات میں دخل نہ دیا جائے کیونکہ یہاں کے لوگ زیادہ مذھبی ھیں اور اگر انکے معاملات میں دخل دیا جائے تو سخت مخالفت ھوگی - اور انہیں برقرار رکھکر وہ اکسپلائیٹیشن (Exploitation) کرنا چاھیے تھے - انہوں نے کیا اور وہ واجبی تھا - لیکن آج تو وہ حالت نہیں ہے - رلیجس معاملات پر کئی لیجسلیشنس پاس ھوچکے ھیں - ھندو ویمنس رائیٹ ٹو پراپرٹی ایکٹ (Hindu Womens Right to Property Act) ہے ......

مسٹر چیرمن :- انڈومنٹس ایکٹ ہے -

شری ادھو راؤ پٹیل :- ھاں - انہیں کیوں رکھا گیا - اس طرح برقرار رکھنے سے کیا آپ کی سیکولر گورنمنٹ میں مشکلات نہیں پیدا ھونگی - اور پھر دیکھئے کہ ان

انعامات کا کیا حشر ہو رہا ہے ؟ ان سے کیا خدمت ہورہی ہے ۔ میں جانتا ہوں کہ
جو مٹھ پتی ہیں انکا کیا حال ہے ۔ وہاں برائیوں کے اڈے ہیں ۔

بس یہی کہ وہ شادی نہیں کرتے مگر سب کچھ ہوتا ہے ۔بلکہ میں یہاں تک
کہونگا کہ انکی حالت ہندو دھرم کے لئے ایک کلنک ہے ۔ انکا وجود میں بے عزتی
سمجھتا ہوں ۔ لیکن آپ ان کے لئے برقرار رکھتے ہیں ۔ جس انڈومنٹ ایکٹ کا رفرنس دیا
گیا ہے اس میں انہیں ٹیننٹس سے بالا تر رکھے ہیں ۔ ایسے کیسس ہیں کہ مٹھ پتی
کوشش بھی نہیں کرتے تھے آپ اس کا دس گونا ریوینیو رنٹ وصول کرتے ہیں ۔ خیر میں
اس تفصیل میں جانا نہیں چاہتا ۔ میسور میں بھی اسی لئے اس چیز کو سلکٹ کمیٹی کے
تفویض کیا گیا ۔ وقت کی کمی کے لحاظ سے میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں ۔

Mr. Chairman: Only 2 to 3 minutes will be allotted for the hon. Member.

Shri Devisiugh Chauhan (Ausa): In view of the time given to other hon. Members, I expect that I would be given at least ten minutes.

Mr. Chairman: The time appointed for the Minister's reply was 7 O'clock and it is already past 7 p.m. Anyhow, five minutes' time is allowed to the hon. Member.

Shri Devisingh Chauhan: I think it would be very difficult to express within such a short time on many points raised during the debate.

Mr. Chairman: The hon. Member can summarise his points.

Shri Devisingh Chauhan: The Inam Bill has a long history behind it. The Ministry representative of this Assembly was constituted on 6th March, 1952. Only a day before that date *viz.*, on 5th March, 1952 the Inams Enfranchisement Act was enforced. As the representatives of the people were feeling that the said Act should be revised, another Bill, was brought before this House. The principles incorporated in the new Bill were the same as in the old Act. The Act of 1952 was Enfranchisement of Inams Bill; and the new Bill also was the Enfranchisement of Inams in the State. It was however felt that simple enfranchisement would not be sufficient but abolition should be undertaken and the rights of the tenants should be protected. Therefore this Bill has been brought before this House. I congratulate the Government for accepting these principles and the necessity for incorporating these principles therein. The aims and objects of the Bill have been set out in the Statement of Objects

and Reasons. I would just draw the attention of the House to those aims and objects.

The present Bill intends abolition of all inams excepting religious and service inams. Next, it provides for full assessment being charged for such abolished inams. Under the first Act, only 1/8th of the land assessment or jodi was envisaged to be charged; under the new Bill full assessment was charged; and under the present Bill also full assessment was sought to be levied on the Inamdars. The most important consideration for bringing this Bill is the retention by the Inamdar as well as the tenants of lands under their personal cultivation. The Act and the subsequent Bill which was withdrawn did not envisage to retain the possession of the tenants of lands which they were cultivating for so many years. The present Bill before the House accepts this principle. It should therefore be clear to the hon. Members that by accepting this Bill the House will provide to retain the possession or the occupancy rights of tenants in respect of Inam lands.

Mr. Chairman: There is not much time. I therefore request the hon. Member to cut short his speech.

Shri Devisingh Chauhan: I request the Chairman to give me at least 5 or 10 minutes.

Mr. Chairman: Only 5 minutes.

Shri Devisingh Chauhan: As there is no time and as I am pressed to curtail my speech, I shall only just refer to some of the points.

My first point is about the Statement of Objects and Reasons. What appears to me to be untenable is the following sentence appearing in the Statement of Objects and Reasons:

"Further the Act is likely to be challenged as being discretionary,"

This refers to the Act of 1952. That Act tried to levy only 1/8th of the land assessment on the Inamdars, and patta rights were given to them. At that time, Government might have taken counsel from the Legal Adviser. At the time of drafting the previous Bill, also, legal advice was obtained, and, I think, Government might have been fully satisfied that the existing Act of 1952, or the Bill which was withdrawn, in 1953—both of these pieces of legislations—were

fully valid, if full assessment was charged to the Inamdars and pattas were given to them. So, the Act of 1952 as also the Bill which was withdrawn were not discretionary. Under the circumstances, the sentence quoted by me above from the Statement of Objects and Reasons, I feel, is unnecessary.

One departure has been made in this Bill, *i.e.*, the Bill seeks to give some compensation to the Inamdars. The reason for giving compensation is that we are taking Inam lands from the Inamdars and making the pattas of these lands in the name of the tenants (*Interruptions from Several Opposition Members*).

شری ادھو راؤ پٹیل :— ان کے لئے ساڑھے چار فیملی ھولڈنگ چھوڑی جا رھی ھے۔

Shri Devisingh Chauhan: I am sorry, I cannot go into details, because the time at my disposal is very short. It cannot be said that the enactment which was enforced after the promulgation of the Constitution was on faulty grounds. The compensation proposed under this Bill is on quite different grounds. Therefore, the sentence quoted by me should not be there in the Statement of Objects and Reasons.

The object underlying this Bill, *viz.*, that the inamdars and the tenants on the inam lands should retain their lands, is quite laudable, and I congratulate the Government on this. But when we go through the provisions of the Bill, the same object has, I am afraid, been relegated to the back-ground. Because, when the question of giving patta rights to the inamdars is considered in section 4, in spite of the fact that Inamdars may have pattas of a large number of acreage in their name which they cannot resume under the existing Tenancy and Agricultural Lands Act, still an attempt is being made under section 4 to give some more land from the Inam lands to the Inamdars. I admit that by this provision, the actual possession of the inamdars is not disturbed. The possession will be with the tenants, but still, patta rights would be given to the Inamdars and the consequential effect upon the tenants would be the application of Section 44 of the Tenancy Act. By this procedure, the Inamdar gets the right of disturbing the possession of tenants. Therefore, I submit, that this provision of giving patta rights to the Inamdars in addition to the patta lands which he holds, indirectly goes against the objects which have been apparent in this legislation. I would request the Member in charge of this Bill to reconsider the issue.

Similarly, the scope of the word "Inamdar" has been greatly increased. The main object of reconsidering the existing Inam law was simply to protect the rights of the tenants. But here, an attempt has been made to widen the scope of the definition of the word "Inamdar". Formerly, the word "Inamdar" simply meant a person who holds Inam land. Under the revised definition, "Inamdar" means a person holding an inam or a sharer therein, either for his own benefit or in trust and includes the successor in interest of an Inamdar and, where an Inamdar is a minor or of unsound mind or an idiot, his lawful guardian and where an Inamdar is a Member of a joint Hindu family, such joint Hindu family. "Inamdar means a person holding an Inam"—this is the old part of the definition. The subsequent words have been added to them. So, the definition of the word "Inamdar" has been greatly widened, and when the question of allotting patta rights to the Inamdars would come, then, though the Inamdar may be one single person, yet, some 5, 10 or 15 sharers in the Inam lands may come forward and claim that they also are entitled to get $4\frac{1}{2}$ times the family holding of patta on their names.

Mr. Chairman : A person can be interpreted to mean only one person.

Shri Devisingh Chauhan : May be, Sir. By widening the definition of Inamdar, we are simply creating more scope for depriving the tenants of their patta rights and giving more advantage to the Inamdars. I would strongly plead that the original definition of "Inamdar" which had been accepted in the Atiyat Act, the Act of 1952 and also in the Bill which was withdrawn in 1953 should be retained, and that we should not make any attempt to widen the scope of the definition, which could only lead to the deprivation of the rights of the tenants.

I would like to invite the attention of the House to section 8 where non-protected tenants are given the patta rights. The protected tenant has been defined as one who has been declared protected under the sections of Tenancy and Agricultural Lands Act. But here, it has been provided that a tenant who has obtained possession of land after 10th June, 1950, would not be entitled to any patta right. So; I would invite the attention of hon. Member in charge to the repugnancy or conflict between the definitions of a protected tenant and a non protected tenant. This conflict should be removed.

Mr. Chairman : Difference between the Tenancy Act, and this Act :

Shri Devisingh Chauhan : In this very Act, itself, a protected has been defined as a person who is declared a protected tenant under the provisions of the Tenancy Act.

شری کے - وی - رنگا ریڈی :—کیا جواب کے لئےوقت بڑھایا جائیگا -

مسٹر چیرمن :— اگر ضرورت ہوتو بڑھایا جائیگا -

Shri Devisingh Chauhan : So, a protected tenant can become a protected tenant after retaining his possessions for one year, after 10th June, 1950. That is, if he retained his possession up to June 1951, he becomes a protected tenant. But under section 8, it has been provided that a person who obtains the possession of the Inam land after June, 1950 would not be entitled to patta rights. So, there is....

Mr. Chairman : This can be dealt with when the amendments to the relevant clauses are taken up.

Shri Devisingh Chauhan : Mr. Chairman, Sir. If your suggestion is fulfilled, then my argument will not have been in vain.

I want to say a word about compensation. Without going into the merits and the amount of compensation, I would just draw the attention of the hon. Member-in-charge of the Bill to the compensation which has been provided for kabiz-e-kadim, tenants. They give only land revenue to the Inamdars. The Inamdars, under these conditions, are entitled only to land assessment. But here, when patta rights are being given to the Inamdar, then, even he is entitled to compensation under section 12. This is not correct, because, under the old Act or the Bill withdrawn, simply full assessment was charged and no compensation was paid. This was quite valid and unassailable. It cannot be assailed on legal or constitutional grounds. Therefore, it is unnecessary to provide any compensation to the Inamdar when the patta rights of his land have been given to him.

I would now like to draw the attention of the House to one general aspect. The hon. Member from Osmanabad referred to section 31 of the Constitution as applicable to all the property under the Inam Bill. I would like to submit that

that is not so. The Constitution has been amended in 1951, and for dealing with Estates, section 31-A, has been particularly incorporated in the Constitution. Section 31-A, lays down that if an Estate has been taken possession of by the Government without providing any compensation, even, in those circumstances, the legislation cannot be quite assailed, provided it gets the assent of the President. Under the Inam Bill, if all the Inams were vested in the Government and no compensation were provided; and the assent of the President is obtained, then it would mean a very valid piece of legislation. It cannot be challenged. It does not attract any other provisions of the Constitution, making this piece of legislation invalid or void. But, in providing compensation under this Bill, it is the intention of the Government that a certain section of the agriculturists who were enjoing some income from agriculture should not be at a moment's notice disturbed; they should get some other occupation or source of income. So, compensation has been provided. That is the intention. The same object could have been attained if rehabilitation grants were given. It was not necessary to provide compensation. In a way, we are simply providing some means to certain sections of the community to adopt other professions. We don't want to disturb them immediately and leave them without any means of livelihood at this moment.

شری گروا ریڈی :— گدوال اور ونپرتی کے راجه صاحب کو بھی تو آپ دے رہے ھیں۔

Shri Devisingh Chauhan: Without going into individual cases which the hon. Member wants me to do, I will only discuss the general nature of the problem.

مسٹر چیر من :— اب ساڑھے سات بج چکے ھیں اسلئے آپکو وقت نہیں مل سکتا ورنه اسکو کل پر رکھنا پڑیگا ۔

Shri Devisingh Chauhan: So, the time at my disposal is over, and without taking more time of the House, I would request the hon. Member in charge of the Bill to bring in some amendments, so that this legislation will be of real benefit to the tenants.

The main object of reconsidering the Inams Abolition Bill is simply to protect the rights of the tenants. Whatever is necessary for the protection of the rights of the tenants on these inam lands should be done. Whether it is the definition of the 'Inamdar', whether it is the issue of compensation,

or whether it is the question of giving patta rights to the Inamdar and also the tenants, all these questions should be reconsidered, and I think with these small adjustments this legislation would be very healthy and very progressive.

Some Members of the House have referred to Bombay legislation. I can make myself bold enough to say that our Bill is far more progressive and advanced than the Bombay legislation. The Bombay legislation is simply an Enfranchisement Act. Ours deals with the abolition of Inams. The Bombay Act, does not take into consideration the rights of the tenants on these Inam lands; our purpose in bringing this Bill before this House is to protect the rights of the tenants on the Inam lands. Not only are we protecting their rights, but we are giving patta rights to them. We may charge some compensation, but it is immaterial because we are giving patta rights to the tenants.

I once again congratulate the Government for bringing before this House an advanced and progressive piece of legislation for the protection of the rights of Inam tenants.

Shri A. Gurva Reddy: Mr. Chairman, Sir, If the hon. Minister takes more than 30 minutes to reply he may be given time for that purpose tomorrow.

مسٹر چیرمن :— کیا آپ آدھے گھنٹے میں اپنی تقریر ختم کریں گے ۔

شری کے۔ وی۔ رنگا ریڈی :— مجھے تو ایک گھنٹہ دیا گیا تھا اسپیکر صاحب نے کہا تھا کہ ۷ بجے سے میں جواب دوں ۔ چونکہ ممبرس نے اسپیچس دینے پر اصرار کیا تھا اس لئے ٹائم بڑھ گیا۔ اگر ساڑھے آٹھ تک ٹائم دیا جائے تو اچھا ھے ورنہ میں آدہ گھنٹے میں ختم کرنے کی کوشش کروں گا ۔

مسٹر اسپیکر سر :— کونسے الفاظ کس دفعہ میں رکھنا چاھئے یا کونسی ترمیم کونسے دفعات میں ہونی چاھئے اس بحث کی یہ نوبت نہیں ھے ۔ عام طور پر یہاں تو صرف ھم کو قانون کے وضع شدہ دفعات کے منشاء پر ھی بحث کرنی چاھئے ۔ اس لئے میں ھر چیز کا علحدہ علحدہ جواب نہیں دوں گا بلکہ مجموعی طور پر جواب دینے پر اکتفا کروں گا۔

اس قانون پر صحیح رائے زنی کرنے کے لئے اس بات کی ضرورت ھے کہ ھم یہ صحیح طور پر سمجھیں کہ اراضی انعام در اصل کیا چیز ھے ۔ بعض مباحث سننے کے بعد میں اس نتیجہ پر پہنچا ہوں کہ اراضی انعام کے صحیح مفہوم پر غور ھی نہیں کیا گیا۔ اگر اراضی انعام کا مفہوم اچھی طرح سمجھ لیا جائے تو میں سمجھتا ہوں کہ جتنے مباحث ہوے ھیں اون میں کے آدھے مباحث خود بہ خود ختم ھو جاتے ھیں۔ اس لئے

میں سب سے پہلے اراضی انعام کے اصل مفہوم کو واضح کرنا چاھتاھوں۔ جو اراضیات بہ تعلق عطیات ھوتے ھیں ان کو ھم نے انضام کے قوانین کے اغراض کے لئے دو حصوں میں تقسیم کیا ھے ۔ جہاں تک '' موضع،، کا تعلق ھے اوسے جاگیر کی تعریف میں داخل کیا ھے۔ خواہ وہ اگرھارھو اصلی یامکاسا یا اور کچھ ۔اور ایسی جاگیریں ابالیشن آف جاگیرس کے ساتھھی ختم ھو گئیں ۔ لیکن جہاں موضع نہیں صرف اراضی ھے تو اوس کو ھم انعام کی تعریف میں لے رھے ھیں ۔ اور اوسی کو ھم ختم کرنے کی کوشش کر رھے ھیں ۔ اراضی انعام میں مقطعہ خواہ وہ مشروطالخدمت ھو یا غیر مشروطالخدمت ھو ۔ بالمقطہ ھو یا بلا مقطعہ وغیرہ یہ جملہ اراضیات عطیہ اراضی انعام کی تعریف میں داخل ھیں ۔ جاگیرات میں معطیلہ کو صرف محاصل سے استفادہ کرنے کا حق دیا گیا ھے۔ اون کے اسناد میں یہ چیز لکھ دی جاتی ھے۔ اور پٹیل پٹواریوں ۔ دیشمکھوں اور عام رعایا کویہ بتایا جاتا ھے کہ فلاں جاگیر فلاں کو دی گئی ھےآئندہ وہ اس کےمحاصل سے استفادہ کریگااراضی مین کوئی حقیت اوس کی نہیں رھے گی ۔ اس لئے ابالیشن آف جاگیرس کے پہلے اور اوس کے بعد بھی یہ احکام دئے گئے تھے کہ کوئی جاگیردار اپنی جاگیرمیں کسی اراضی کا اپنے نام پٹہ نہیں کرسکتا ۔ اس میں استثنا یہ رکھا گیا تھا کہ وہ ذاتی کاشت کی حد تک پٹہ کر سکتا ھے۔ برخلاف اس کے اراضی انعام کی صورت مختلف ھے۔ انعام میں محاصل سے استفادہ کرنے کا حق دیا گیا ھے اور قبضہ کے حقوق سے بھی استفادہ کرنے کا حق دیا گیا ھے۔ آپ یہ کہہ رھےھیں کہ چوں کہ انعام دار کو قبضہ منتقل کرنے کا حق دیا گیا ھے اس لئے اوس کو معاوضہ نہیں دینا چاھئے ۔ آپ یہ سمجھ رھے ھیں کہ اوس کو صرف محاصل سے استفادہ کرنے کا حق دیا گیا ھے ۔ اس تصور کی بنا پر اس قانون پرغور کیا جا رھا ھے جو ایک بنیادی غلطی ھے ۔ انعامدار کو جیسا کہ میں نے کہابلا ادائی محاصل سرکاراراضی استفادہ کرنے کا حق حاصل ھے۔ خواہ زمین خود کاشت کرے یا قول پر دے ۔ بجز اس کے کہ اوس کے انعام میں کوئی حصہ مقرر کیا گیا ھو ۔ اس سے ظاھر ھے کہ محاصل سے استفادہ کرنے کے علاوہ اراضی دوسرے کو دینے یا اپنے استفادہ کیلئے رکھنے کا حق بھی حاصل ھے ۔ بعض مباحث سے معلوم ھو رھا ھے کہ بعض لوگ یہ تصور کر رھے تھے کہ حق انتقال انعامدار کو نہیں اس میں شک نہیں زمانہ سابق میں جو فرامین جاری ھوے تھے اوس کے تحت بیع یا رھن کرنے کا اختیار نہیں تھا ۔ اوس وقت یہ طے کیا گیا تھا کہ انعامدار اپنے حقوق کو منتقل نہ کرے۔ لیکن ۱۸ فصلی میں ایک حکم کے ذریعہ اس کی وضاحت کی گئی ۔ میں وہ حکم ابھی آپ کو پڑھ کر سناؤں‌نگا ۔ اس کے ذریعہ حکم دیا گیا ھے کہ انتقال معاش پر جو امتناع عائد کیا گیا ھےاوس کا منشا یہ نہیں کہ کوئی شخص اس اراضی کا حق مقابضت دوسرے کو نہ دے ۔ اس اراضی پر وہ دوسرے کو پٹہ دار بنا سکتا ھے۔ اور بہ تقرر پن اور نزول پر دے سکتا ھے ۔ جو مانعت منتقلی کی ھے وہ حق انعام سے ھے ۔ حق قبضہ یا حق پٹہ کی منتقلی سے یہ احکام متعلق نہیں ھیں۔ یہ آج کا حکم نہیں ھے بلکہ ۸۰ف کا ھے اگرھم اس کو مان لیں تو یہ تسلیم کرنا پڑیگا کہ انعامدار کے دو حقوق میں سے ایک حق کی منتقلی پر امتناع

عائد ہے۔ لیکن دوسرے حقوق یعنے حقوق قبضہ یا انتقال پر امتناع نہیں ہے ۔ اگر یہ تسلیم کرلیا جائے تو تمام مباحث خرد بخرد ختم ہوجاتے ہیں ۔ وہ حکم میں پڑھ کرسناتا ہوں ۔

”........ انعامداران کو جن کی اراضی بہ حکم بحالی دوام تصفیہ پاچکی ہے ضرور یہ حق حاصل ہے کہ وہ اپنی اراضی بہ تقرر پن کاشت پر دیں تعمیر امکنہ کے لئے پٹہ پر دیں یا خود اوس میں کاشت کریں یا مکان بنائیں ممانعت نہیں ہے ۔ بیع، رہن ، ہبہ عطیہ شاہی کو اس صورت سے بالکل تعلق نہیں ہے ۔ بہ تعین پن پٹہ پر دینا داخل انتقال ملکیت نہیں ہے “.........

یہ صراحت سنہ ۱۸ ف میں ہوئی ہے اور اس سے صاف ظاہر ہوگا کہ انعامدار آراضی پٹہ پر دے سکتا ہے ۔ ایسا حق پٹہ قانون مالگزاری کے تحت قابل توریث ہے ۔ اگر کوئی رائے شخص مر جائے تو اوس کے ورثاء کو اوس کا حق پہنچتا ہے اور وہ اوسکو رھن یا بیع کرسکتے ہیں ۔

شری بی ۔ ڈی ۔ دیشمکھ (بھوکردن ۔ عام) :— میرا خیال یہ ہے کہ پٹہ بہ معنی قول استعمال ہوا ہے نہ کہ بہ معنی حقوق ۔

شری کے ۔ وینکٹ رنگا ریڈی :— مال کے قانون میں ایسا نہیں ہے البتہ دیوانی قانون میں پٹہ اور قول مترادف الفاظ ہیں ۔ قانون مال میں پٹہ اور چیز ہے اور قول اور چیز ۔ قول مدتی بھی ہوا کرتا ہے لیکن پٹہ مدتی نہیں ہوتا ۔

شری کے ۔ اننت ریڈی :— کیا یہ بتایا جا سکتا ہے کہ ایسی کتنی اراضیات ہیں جو اسطرح پٹہ کی ہیں ؟

شری کٹھ رام ریڈی (نلگنڈہ ۔ عام) :— صرف راست مالگزاری ادا کرنے کا حق ہے اور کوئی حق نہیں ہے ۔

شری کے ۔ وینکٹ رنگا ریڈی ۔ آپ اس کے متعلق سوال پوچھیں تو میں مواد منگوا کر کوئسچن اور (Question Hour) میں اس کا جواب دونگا ۔ اس وقت میں آپ کو مواد فراہم نہیں کرسکتا ۔ یہاں تو صرف میں آپ کو قانون بتا رہا ہوں اس کو مان لینا چاہئے ۔ اگر یہ غلط ہے یا یہ قانون منسوخ ہوگیا ہے تو آپ اوسکی تردید کیجئے ۔ اب یہ کہ اس قانون پر عمل نہیں ہورہا ہے تو یہ اور بات ہے۔ میں نے خود آج سے (۴۰) سال قبل بذریعہ رجسٹری انعامدار سے پٹہ حاصل کیا ہوں وہ زمین اس وقت میرے قبضہ میں موجود ہے ۔ میں نے اوس میں باغ لگایا ہے ۔ میں آپ کو اوسکی رجسٹری بھی بتا سکتا ہوں ۔

شری ادھو راؤ پٹیل :— آپ نے جو اراضی حاصل کی کیا اوس کا اسسمنٹ بھی ہوا ہے؟

شری کے ۔ وینکٹ رنگا ریڈی ۔ غرض میں یہ کہونگا کہ حق پٹہ علحدہ ہے اور حق انعام

علحدہ ھے۔ اگر اس کو مان لیں تو پھر میرے لئے باقی چیزوں کا جواب دینا آسان ہوجائیگا ۔ میں اس کے بعد یکے بعد دیگرے اعتراضات کا جواب دونگا ۔ سب سے پہلے یہ اعتراض کیا گیا ھے کہ اس قانون کو فوراً نافذ کرنا چاھئے اور کوئی تاریخ نفاذ مقرر کرنے کا اختیار گورنمنٹ کو نہیں دینا چاھئے ۔ میں آپ سے یہ کہونگا کہ آپ تو اس کو فوراً نافذ کرانا چاھتے ھیں اور میں یہ چاھتا ھوں کہ فوراً سے بھی پہلے یہ قانون نافذ ھو جائے ۔ لیکن بات یہ ھے کہ ھمکو محض الفاظ پر غور نہیں کرنا چاھئے بلکہ دیکھنا یہ ھے کہ آیا فوراً نافذ کرنے پر عمل کرنا ممکن ھو سکتا ھے یا نہیں ۔ اس بل کے دفعات کے لحاظ سے قواعد بھی بنانا پڑیگا ۔ اس میں بہت سے امور کی تحقیقات کرنی پڑیگی ۔ یہ چیزیں کرنے کے بعد ھی قانون قابل عمل ھوگا ۔ اس کے بغیر نہیں یعنی قابض کو پٹہ دینے کا حکم دیا گیا ھے لیکن پٹہ کی تحقیقات ھونا اور طریقہ تحقیقات کا معین کرنا وغیرہ یہ چیزیں باقی ھیں ۔ ان چیزوں کے متعلق قواعد بننے کے بعد ھی اوس پر عمل ھوگا ۔ فوراً نافذ کرنے کے الفاظ اسواسطے نہیں لکھے گئے ۔ اس لئے آپ کا اصرار کہ فوراً نافذ ھو کوئی اصولی چیز نہیں ھو گی ۔ فوراً نافذ کرنے کے احکام اوسی وقت دے سکتے ھیں جب ان تمام باتوں کی تصفیہ کی ضرورت نہیں ۔ اس میں مجھے اعتراض نہ ھوگا لیکن یہ سمجھا جائیگا کہ ھم نے سوچ سمجھکر قانون نہیں بنایا ۔ عمل کب ھو سکتا ھے اس کا خیال نہیں رکھا ۔ یونہی تاریخ نفاذ مقرر کردیگئی ۔

معاوضہ کے متعلق بہت کچھ رائے زنی کی گئی ھے ۔ کوئی صاحب کہتے ھیں کہ معاوضہ نہ دینا چاھئے اور کوئی صاحب کہتے ھیں کہ معاوضہ دینا چاھئے ۔ یہ کہا جارھا ھے کہ مالگزاری کی بناء پر دینا چاھئے اور یہ بھی کہا جارھا ھے کہ منافعہ کی بناء پر دینا چاھئے ۔ زیادہ دینا چاھئے ۔ کم دینا چاھئے کیونکہ یہ عطا ھے اور بادشاہ وقت کو جب چاھے اسے واپس لینے کا اختیار تھا اس لئے اس کو معاوضہ دینے کی ضرورت نہیں وغیرہ وغیرہ ۔ اگر دستور کے لحاظ سے ھم معاوضہ دینے سے بچ سکتے ھیں تو میں آپ صاحبین میں پہلا شخص ھونگا کہ بغیر معاوضہ دئے انعامات برخاست کروں ۔ آپ صاحبین کو یاد ھوگا کہ مناصب وغیرہ کی بر خاستگی کے قانون کے وقت بھی یہ مسائل آئے تھے لیکن اسوقت اس پر لحاظ نہیں کیا گیا ۔ وہ مسئلہ بالاخر ھائیکوٹ میں گیا ۔ وھاں اوس مسئلہ پر بحث ھوئی اور وہ زیر تجویز ھے ۔ مجھے اندیشہ ھے کہ وہ دستور کے خلاف ھونے کی وجہ سے ختم ھو جائے ۔ اس لئے ھمیں قانون سوچ سمجھکر دستور کو پیش نظر رکھتے ھوئے بنانا چاھئے تاکہ کورٹ آف لا میں چیالینج کیا جائے تو چیالینج نہ ھوسکے ورنہ میں سمجھتا ھوں کہ یہ اتنی معمولی غلطی نہ ھوگی جسکو نظر انداز کیا جا سکے اس لئے تفصیلی جوابات دینے کے بجائے میں یہ سب اعتراضات کا جواب سمجھونگا ۔ اگر دستور اجازت دے تو ھم معاوضہ نہ دینگے لیکن میں سمجھتا ھوں کہ دستور کہتا ھے کہ منقولہ اور غیر منقولہ جائداد ھی کا سوال نہیں ھے . . . . . .

شری کے ۔ ایل ۔ نرسمہاراؤ :— پریسیڈنٹ کی رضامندی حاصل ھو جائے تو معاوضہ

دینا نہیں پڑتا جیسا کہ دیوی سنگھ صاحب چوھان کہہ رہے تھے - اس بارے میں آپ کی رائے کیا ھے -

مسٹر چیر من :- حکومت جیسی ضرورت سمجھتی ھے ویسا جواب دیر ہے ھیں -

شری کے - وی - رنگا ریڈی :- میں اسکو تسلیم نہیں کرتا - دستور کے لحاظ سے معاوضہ دینا ضروری ھے - بعض صورتوں میں پریسیڈنٹ کی اجازت سے عذر رفع ھو جاتا ھے لیکن ھر صورت میں نہیں ھوتا - جیسا کہ میں کہہ رہا تھا جائداد کے معاوضہ ھی کا سوال نہیں ھے - اب جبکہ دستور اجازت نہیں دیتا ھے تو ھمیں یہ دیکھنا ھوگا کہ ھم کس قسم کا معاوضہ دینگے - ھمیں دو قسم کا معاوضہ دینا ھوگا یعنی ایک تو اراضی سے استفادہ کا جو حق تھا اسکا معاوضہ دینا ھوگا اور دوسرا خود کاشت نہ کرتے ھوئے زر مالگزاری سے زیادہ معاوضہ لینے کا جو حق تھا اسکا بھی معاوضہ دینا ھوگا - معاوضہ مشخص کرتے وقت ھماری نظر ان دونوں پہلوؤں پر ھونی چاھئے - ھم جب انعامدار کا حق انعام ختم کررہے ھیں تو ھم اسکے قبضہ کو نہیں دیکھینگے بلکہ اسکے استفادہ آمدنی کے حق کو دیکھینگے خواہ وہ ذات سے کاشت کررھا ھو یا نہ کر رھا ھو کیونکہ سرکار کو مالگزاری دئے بغیر اسکو استفادہ آمدنی کا حق ھے - اگر اسکو وہ پٹہ پر دیتا ھے تو وہ پٹہ دار قابض کے مانل ھوجائیگا اسلئے انعامدار کو بلا لحاظ قبضہ کے اسکا جسقدر انعام کا رقبہ ھے اسکا معاوضہ تاحد حق انعام دینا پڑیگا -

ھم نے اراضی انعام کے قابضین کو معاوضہ کے اغراض کیلئے کو چار اقسام میں تقسیم کیا ھے - قابض قدیم - محفوظ قولدار - غیر محفوظ قولدار اور مستقل قولدار - قابض قدیم کے متعلق بہت سے صاحبین نے اعتراض کیا ھے - اسکی نسبت ترمیمات پیش ھونگی تو ترمیمات کی نوبت پر میں جو مناسب ترمیم سمجھونگا اسے قبول کرونگا -

شری پنڈم واسدیو (گجویل):- آپکی رائے میں دو طرح کے معاوضے دینا طے ھے - دستور ھند کی رائے میں کیا ھے؟

شری کے - وی - رنگا ریڈی :- آرٹیکل ۳۱ ملاحظہ فرمائیں - اسکے الفاظ کے لحاظ سے جائداد منقولہ یا غیرمنقولہ یا اوسکا کوئی حق بھی لینا چاھتے ھیں تو اسکا بھی معاوضہ دینا ھوگا - اگر بلا ادائی معاوضہ اراضی کی آمدنی سے استفادہ حاصل کرنے کا حق ھے تو وہ حق جائداد غیر منقولہ ھے اور وہ بھی جائداد میں شامل ھوگا - یہ میری رائے ھی نہیں بلکہ پریوی کونسل کے فیصلوں اور سپریم کورٹ کی رولنگس(Rulings) کے لحاظ سے بھی معاوضہ دینا پڑیگا -

میں نے جو چار قسم کے قابض بتلائے ھیں ان میں ایک قدیم قابض ھے - اس سے بغیر کسی پریمیم کے لینے کے اوسکے نام پٹہ کرنے کے احکام ھم نے رکھے ھیں - البتہ باقی تین سے اگر انہیں پٹہ دیا جائیگا تو معاوضہ لینے کا حکم دیا گیا ھے - اسمیں سے انعامدار کو ۵۰ فیصد معاوضہ دلایا جائیگا محفوظ قولدار یا عارضی قولدار ھونے کی وجہ سے زیادہ معاوضہ انعامدار کو مل سکتا ھے - اصول یہ ھے کہ جہاں اراضی پر قابض کو زیادہ

حق تھا اوس سے وہاں کم معاوضہ اور جہاں زیادہ حق نہ تھا اوس سے کم معاوضہ لیا جائے تسلیم کیا گیا ۔ ٹیننسی ایکٹ کے لحاظ سے جو حقوق قولداروں کو آئندہ ملنے والے تھے انکو فوری دلانے کے لئے ہم نے یہ قاعدہ وضع کیا ھے ۔ اس سے ایک طرف تو آئندہ مقدمہ بازی اور عہدہ داروں کے پاس پیروی کرنے کی ضرورت نہیں رہتی اور دوسری طرف انعامداروں کے زیادہ استفادہ کی صورت میں زیادہ ۔ کم استفادہ کرنے کی صورت میں کم اور جہاں استفادہ نہیں ہوتا وہاں بہت ھی کم معاوضہ مقرر کرنے سے انعامدار اور قولداروں میں مساوات قائم ہو گی ۔ اسطرح جو معاوضہ مشخص ہوگا وہ صحیح اصول پر مبنی قرار پاتا ھے ۔ اگر ہم ایسا معاوضہ مقرر نہیں کرینگے تو آئندہ چلکر عدالتوں میں یہ قانون باقی نہیں رہ سکے گا اور منسوخ ہو جائیگا ۔

اب اس میں مالگزاری کے لحاظ سے معاوضہ دینا چاھئے یا منافعہ کے لحاظ سے معاوضہ دینا چاھئے میں اسکا جواب دینے کی ضرورت نہیں سمجھتا ۔ کل جب ترمیمات پیش ہونگی اس وقت غور کیا جائیگا ۔ اگر مالگزاری کی بیسس پر معاوضہ دینا قرار دیا جائے اور وہ زیادہ بہتر معلوم ہوتو میں اسکو قبول کرونگا ۔ لیکن آپکو یہ بتلانا پڑیگا کہ کونسی صورت قولدار کے لئے بہتر ہوسکتی ھے ۔ اگر آپ یہ بتلائیں تو میں اسکو بلا پس و پیش تسلیم کرونگا ۔

شری عبد الرحمن :— اس نوبت پر آپ اپنی رائے بتلائیے ۔

شری کے ۔ وی ۔ رنگا ریڈی :— جب آپ ترمیمات پیش کرینگے تو میں اپنی رائے بتلاؤنگا ۔ اپنی رائے سے تو میں نے قانون مرتب کیا ھے ۔ اگر آپ کے مباحث کے بعد مجھے اپنی رائے میں ترمیم کی ضرورت محسوس ہوتو میں ضرور اسکو تسلیم کرونگا ۔

بعض صاحبین نے فرمایا کہ جب انعامداروں کو معاوضہ دینے ھی کا سوال ھے تو کم از کم یہ ہونا چاھئے کہ بڑے انعامداروں کو کم معاوضہ اور چھوٹے انعامداروں کو زیادہ معاوضہ دیا جائے ۔ اسکو بھی میں دستور پر چھوڑتا ہوں ۔ اگر یہ جائز ہوتو میں اسکو تسلیم کرونگا لیکن میری رائے ھے کہ ایک ایکر والے کو ۵۰ روپیے معاوضہ دیتے ہیں تو ایک سو ایکر والے کو پانچ ہزار دینا ضروری ہوگا ۔ کیونکہ معاوضہ جائداد کا ہوتا ھے مالک جائداد کا نہیں ہوتا ۔ یہ بڑے پیٹ والے ھیں یا بڑے دولتمند ھیں یا جھونپڑی میں رہتے ھیں یہ نہیں دیکھا جائیگا بلکہ جائداد دیکھی جائیگی ۔ یہ میری ناقص رائے ھے ۔ اگر آپ اپنی قابلیت کے لحاظ سے یہ بتلائینگے کہ بڑی جائداد والوں کو کم معاوضہ دینا چاھئے اور غریب آدمی کی جائداد کے لئے زیادہ دینا چاھیے تو یہ اور بات ھے ۔ . . .

شری گوپال راؤ (پاکھال) :— آپکے کہنے کے مطابق جاگیر ابالیشن کے وقت کیا یہی نہیں ہوا ۔ بڑے جاگیرداروں کو کم معاوضہ ملا ۔

شری کے ۔ وی ۔ رنگا ریڈی :— غلط فہمی ہو رہی ھے ۔ بڑے جاگیرداروں میں اور چھوٹے جاگیرداروں میں معاوضہ دینے کے لئے ہم نے کوئی تفریق نہیں کی ۔ البتہ

بائنگھوں کو ہم نے کم معاوضہ دیا ہے - اور یہ اس وجہ سے کیا گیا کہ انکے ذمے کچھ سرکاری خدمات کرنا یعنی فوج وغیرہ رکھنا ضروری تھا - سرکار کی خدمت کے عوض ۲۰ فیصد مزید وضعات کیا گیا - جملہ جاگیرداروں سے ۶۰ فصد وضع کرنے کے بعد ۴۰ فیصد دینے کے لئے ہم نے رکھا ہے - البتہ انکی ادائی کی مدتوں میں فرق ہے - یہ کم و بیش بنیاد تھی - یہ نہیں ہے کہ بڑی جائداد کے مالک اور چھوٹی جائداد کے مالک میں متیاز کیا گیا ہے - البتہ انکی اقساط میں فرق ہے - کسی کے قساط ۱۰ سال میں کسی کے ۱۵ سال میں اور کسی کے ۲۰ سال میں دیرھے ہیں - حالات کے لحاظ سے جتنی مدت میں اپنے پیر پر کھڑے ہو کر زندگی بسر کرنے کے قابل ہوسکتے ہیں اس کا لحاظ کیا گیا ہے -

شری ادھو راؤ پٹیل :— اگر اور وقت کی ضرورت ہے تو ہم کل تازہ دم آکر منسٹر صاحب کی تقریر سننا چاہتے ہیں -

شری گوپال راؤ :— کل تک ملتوی کرنا مناسب ہوگا کیونکہ اگر پہلی تقریر میں شبہات ختم ہوجائیں تو پھر امنڈمنٹس پیش نہ ہوں گے -

شری گروا ریڈی :— کم سے کم اندازہ تو ہو کہ کتنا منسٹر صاحب وقت اور لیں گے -

شری کے - وی رنگا ریڈی :— میں یہ مناسب سمجھتا ہوں کہ کل رکھنے کے بجائے آج ہی اور ۱۵ - ۲۰ منٹ بیٹھکر اس کو ختم کردیا جائے -

The House then adjourned till Half-Past Two of the Clock on Thursday the 26th August 1954.
